First Timothy: The Household of God

The Family of God

Dr. David Platt

September 18, 2011

परमेश्वर का परिवार

1 तीमुथियुस 3:1–5:16

यदि आपके पास बाइबल है, और मैं आशा करता हूँ कि होगी, तो मैं आपको 1 तीमुथियुस 3 पर जाने के लिए आमंत्रित करना चाहूँगा। आपमें से जो लोग पिछले कुछ महीनों से साथ में हैं, वे जानते हैं कि हम 1 तीमुथियुस का अध्ययन कर रहे हैं। पिछले महीने, आप जानते हैं कि हमने कई बार विराम लिया है : एक बार मेरी सासु माँ के स्वर्गवास पर, और फिर उसके बाद 11 सितम्बर की वर्षगाँठ पर, और इसलिए हम पीछे रह गए हैं। कई कारणों से, मैं इस श्रंखला में और पीछे नहीं रहना चाहता हूँ, क्योंकि फिर मैं और मेरी पत्नी जल्द ही, शायद अक्टूबर या नवम्बर में कभी, दक्षिणपूर्वी एशियाँ से अपनी छोटी बच्ची को लाने जाना चाहते हैं। मैं नहीं चाहता कि हम इस अध्ययन में पीछे छूट जाएँ।

इसलिए मैं अपनी सूची में देख कर मैं कोई उपाय खोज रहा था, और मैंने एक ऐसा निर्णय लिया जिससे मेरे मेंटर मुझ पर लज्जित महसूस करेंगे। आपमें से भी कुछ लोग शायद मेरे उस निर्णय को लेकर मुझ पर लज्जित होंगे, और वह है कि मैं पौलुस की पत्री के ढाई अध्याय को एक ही रात में पूरा करने का प्रयास करुँगा। इसलिए, मेरा लक्ष्य है कि मैं 1 तीमुथियुस 3, 4 और 5वें अध्याय के पहले हिस्से को जल्दी से जल्दी समाप्त करुँ। मैं जानता हूँ कि इस तरह से वचन की शिक्षा को मैं पूरे न्यायसंगत तरीके से नहीं समझा सकूँगा, लेकिन बात यह है कि : 1 तीमुथियुस 3 पर पहले भी कई अवसरों में अध्ययन कर चुके हैं, जब हमने कलीसिया में पुरनियों और सेवकों पर बातचीत की थी, इस तरह से देखें तो हम उसे पहले ही देख चुके हैं।

यदि आपको लगे कि आप संतुष्ट नहीं हैं, तो आप 1 तीमुथियुस 3 पर मेरे पिछले संदेशों को तब तक सुनें जब तक कि आपका मन न भर जाए। तो, यह हुआ 1 तीमुथियुस 3 । मैने योजना बनाई थी कि मैं 1 तीमुथियुस 4 को मैं एक सप्ताह में समाप्त करुँगा, और फिर मैं 1 तीमुथियुस 5 में, पहले आधे हिस्से विधवाओं के मुद्दे को लेकर हैं, जिसे मैं बहुत दिनों से संबोधित करने की सोच रहा था। दरअसल, अगले सप्ताह मैं शहर से बाहर हूँ। आप मेरे लिए प्रार्थना कर सकते हैं। मैं एक सम्मेलन के लिए जा रहा हूँ। मुझे रविवार के दिन बाहर होना अच्छा नहीं लगता है, लेकिन यह मिशन सम्मेलन है

जिसमें बहुत से प्रभावशाली कलीसिया के अगुवे और कुछ अन्य ऐसे लोग शामिल होने जा रहे हैं जो मेरा विश्वास है कि खोये हुओं के पास सुसमाचार ले जाने के लिए हज़ारों लोगों को संघटित कर सकते हैं। इसलिए, मैं अगले सप्ताह यहाँ नहीं रहूँगा, और मैं नहीं चाहता कि मैं अध्ययन के लिए इसे किसी और को दूँ। एक पास्टर होने के नाते मैं चाहता था कि 1 तीमुथियुस 5 के इस हिस्से को मैं स्वयं सिखाऊँ। इसलिए, हमारे पास केवल एक ही विकल्प बचा है कि हम इसका तेज़ रफ्तार से अध्ययन करें।

तो चलिए इस बात पर सोंचना शुरु करते हैं कि परमेश्वर का परिवार होने का क्या अर्थ होता है। मैं विशेषकर, यहाँ हमारे विश्वास के परिवार के बारे में सोच रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि आपमें से कुछ लोग यहाँ ऐसे होंगे जो किसी दूसरी कलीसिया से यहाँ भेंट करने आए होंगे। इसलिए, यदि आप उनमें से एक हैं, तो मैं आपको इस बात पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहूँगा कि आप जिस स्थानीय कलीसिया में हैं उसका हिस्सा होने के आश्चर्य पर विचार करें, और शायद, यदि आप यहाँ हैं, और आप मसीह के अनुयायी नहीं हैं, मैं आशा और प्रार्थना करता हूँ कि आप कलीसिया की तस्वीर में परमेश्वर की भलाई को अभिव्यक्त होते देखेंगे। आप शायद इस परिवार का हिस्सा भी बनना चाहें, लेकिन वे जो विश्वास के इस परिवार का हिस्सा हैं, मैं चाहता हूँ कि हम इन ढाई अध्यायों का अध्ययन करते हुए इस बात पर विचार करें कि परमेश्वर के परिवार का हिस्सा होना हमारे लिए क्या मायने रखता है।

हम जो करने जा रहे हैं, वह यह है कि हम पूरे ढाई अध्ययों को पढ़नेवाले हैं, जो कि स्पष्ट सी बात है कि जितना हम सामान्य तौर पर पढ़ते हैं, यह उससे अधिक लंबा है, लेकिन मैं इसका लाभ उठाना चाहता हूँ। कभी–कभी, हमारे भीतर पौलुस की पत्रियों को लेकर उसके एक–एक वचन का अर्थ खोजने की प्रवृत्ति होती है। हम इस बात को समझने में चूक जाते हैं कि इन पत्रियों को प्राप्त करके, अधिकांश समय एक ही बार में पढ़ा गया होगा। इसलिए, मैं चाहता हूँ कि आप, चाहे हम तीसरे, चौथे और पाँचवें अध्याय के पहले भाग के पढ़े जाते समय, मैं चाहता हूँ कि आप उन्हें लगभग ऐसे सुने मानो आप इफिसुस में हैं, और पौलुस ने यह पत्र आपको लिखा है, और आप यह जानने के लिए उत्सुक हैं कि उसने अपने पत्र में क्या लिखा है। इस तरह, मैं चाहता हूँ कि आप इसे भीतर सोख लें। चलिए इसे पढ़ते हैं, और फिर मिल कर इस पर विचार करते हैं।

तो, चलिए वचन में उतरते हैं। 1 तीमुथियुस 3:1 । पौलुस तीमुथियुस को, इफिसुस की कलीसिया को, और इस तरह हम सबको लिखता है कि :

''यह बात सत्य है, कि जो अध्यक्ष होना चाहता है, तो वह भले काम की इच्छा करता है। सो चाहिए, कि अध्यक्ष निर्दोष, और एक ही पत्नी का पति, संयमी, सुशील, सभ्य, पहुनाई करने वाला, और सिखाने में निपुण हो। पियक्कड़ या मार पीट करने वाला न हो; वरन कोमल हो, और न झगड़ालू, और न लोभी हो। अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो, और लड़के–बालों को सारी गम्भीरता से आधीन रखता हो। जब कोई अपने घर ही का प्रबन्ध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली क्योंकर करेगा? फिर यह कि नया चेला न हो, ऐसा न हो, कि अभिमान करके शैतान का सा दण्ड पाए। और बाहर वालों में भी उसका सुनाम हो ऐसा न हो कि निन्दित होकर शैतान के फंदे में फंस जाए। वैसे ही सेवकों को भी गम्भीर होना चाहिए, दो रंगी, पियक्कड़, और नीच कमाई के लोभी न हों। पर विश्वास के भेद को शुद्ध विवेक से सुरक्षित रखें। और ये भी पहिले परखे जाएं, तब यदि निर्दोष निकलें, तो सेवक का काम करें। इसी प्रकार से स्त्रियों को भी गम्भीर होना चाहिए; दोष लगाने वाली न हों, पर सचेत और सब बातों में विश्वास योग्य हों। सेवक एक ही पत्नी के पति हों और लड़के बालों और अपने घरों का अच्छा प्रबन्ध करना जानते हों। क्योंकि जो सेवक का काम अच्छी तरह से कर सकते हैं, वे अपने लिये अच्छा पद और उस विश्वास में, जो मसीह यीशु पर है, बड़ा हियाव प्राप्त करते हैं। मैं तेरे पास जल्द आने की आशा रखने पर भी ये बातें तुझे इसलिये लिखता हूँ। कि यदि मेरे आने में देर हो तो तू जान ले, कि परमेश्वर का घर, जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है, और जो सत्य का खंभा, और नेव है; उस में कैसा बर्ताव करना चाहिए। और इस में सन्देह नहीं, कि भक्ति का भेद गम्भीर है; अर्थात् वह जो शरीर में प्रगट हुआ, आत्मा में धर्मी ठहरा, स्वर्गदूतों को दिखाई दिया, अन्यजातियों में उसका प्रचार हुआ, जगत ने उस पर विश्वास किया गया, और महिमा में ऊपर उठाया गया।

परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है, कि आने वाले समयों में कितने लोग भरमाने वाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएंगे। यह उन झूठे मनुष्यों के कपट के कारण होगा, जिन का विवेक मानों जलते हुए लोहे से दागा गया है। जो ब्याह करने से रोकेंगे, और भोजन की कुछ वस्तुओं से परे रहने की आज्ञा देंगे; जिन्हें परमेश्वर ने इसलिये सृजा कि विश्वासी, और सत्य के पहिचानने वाले उन्हें धन्यवाद के साथ खाएं। क्योंकि परमेश्वर की सृजी हुई हर एक वस्तु अच्छी है, और कोई वस्तु अस्वीकार करने के योग्य नहीं, पर यह कि धन्यवाद के साथ खाई जाए। क्योंकि परमेश्वर के वचन और प्रार्थना से शुद्ध हो जाती है। यदि तू भाइयों को इन बातों की सुधि दिलाता रहेगा, तो मसीह यीशु का अच्छा सेवक ठहरेगा, और विश्वास और उस अच्छे उपदेश की बातों से, जा तू मानता आया है, तेरा पालन–पोषण होता रहेगा। पर अशुद्ध और बूढियों की सी कहानियों से अलग रह, और भक्ति के लिये अपना साधन कर। क्योंकि देह की साधना से कम लाभ होता है, पर भक्ति सब बातों के लिये

लाभदायक है, क्योंकि इस समय के और आने वाले जीवन की भी प्रतिज्ञा इसी के लिये है। और यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है। क्योंकि हम परिश्रम और यत्न इसी लिये करते हैं, कि हमारी आशा उस जीवते परमेश्वर पर है, जो सब मनुष्यों का, और निज करके विश्वासियों का उद्धारकर्ता है। इन बातों की आज्ञा कर, और सिखाता रह। कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए, पर वचन, और चाल चलन, और प्रेम, और विश्वास, और पवित्रता में विश्वासियों के लिये आदर्श बन जा। जब तक मैं न आऊं, तब तक पढ़ने और उपदेश और सिखाने में लौलीन रह। उस वरदान से जो तुझ में है, और भविष्यद्वाणी के द्वारा प्राचीनों के हाथ रखते समय तुझे मिला था, निश्चिन्त न रह। उन बातों को सोचता रह, और इन्हीं में अपना ध्यान लगाए रह ताकि तेरी उन्नति सब पर प्रगट हो। अपनी और अपने उपदेश की चौकसी रख। इन बातों पर स्थिर रह, क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा, तो तू अपने, और अपने सुनने वालों के लिये भी उद्धार का कारण होगा।

किसी बूढ़े को न डांट; पर उसे पिता जान कर समझा दे, और जवानों को भाई जान कर; बूढ़ी स्त्रियों को माता जान कर। और जवान स्त्रियों को पूरी पवित्रता से बहिन जान कर, समझा दे। उन विधवाओं का जो सचमुच विधवा हैं आदर कर। और यदि किसी विधवा के लड़के बाले या नाती पोते हों, तो वे पहिले अपने ही घराने के साथ भक्ति का बर्ताव करना, और अपने माता–पिता आदि को उन का हक देना सीखें, क्योंकि यह परमेश्वर को भाता है। जो सचमुच विधवा है, और उसका कोई नहीं; वह परमेश्वर पर आशा रखती है, और रात दिन बिनती और प्रार्थना में लौलीन रहती है। पर जो भोगविलास में पड़ गई, वह जीते जी मर गई है। इन बातों की भी आज्ञा दिया कर, ताकि वे निर्दोष रहें। पर यदि कोई अपनों की और निज करके अपने घराने की चिन्ता न करे, तो वह विश्वास से मुकर गया है, और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है। उसी विधवा का नाम लिखा जाए, जो साठ वर्ष से कम की न हो, और एक ही पति की पत्नी रही हो। और भले काम में सुनाम रही हो, जिस ने बच्चों का पालन–पोषण किया हो, पाहुनों की सेवा की हो, पवित्र लोगों के पांव धोए हो, दुखियों की सहायता की हो, और हर एक भले काम में मन लगाया हो। पर जवान विधवाओं के नाम न लिखना, क्योंकि जब वे मसीह का विरोध करके सुख–विलास में पड़ जाती हैं, तो ब्याह करना चाहती हैं। और दोषी ठहरती हैं, क्योंकि उन्होंने अपने पहिले विश्वास को छोड़ दिया है। और इस के साथ ही साथ वे घर घर फिर कर आलसी होना सीखती है, और केवल आलसी नहीं, पर बकबक करती रहती और औरों के काम में हाथ भी डालती हैं और अनुचित बातें बोलती हैं। इसलिये मैं यह चाहता हूँ, कि जवान विधवाएं ब्याह करें; और बच्चे जनें और घरबार संभालें, और किसी विरोधी को बदनाम करने का अवसर न दें। क्योंकि कई एक तो बहक कर शैतान के पीछे हो चुकी हैं। यदि किसी

विश्वासिनी के यहाँ विधवाएँ हों, तो वही उन की सहायता करे, कि कलीसिया पर भार न हो ताकि वह उन की सहायता कर सके, जो सचमुच में विधवाएँ हैं।''

ठीक है। मैं चाहता हूँ कि हमने अभी जो पढ़ा है, शुरुआत हम उसके बीच से करें। 1 तीमुथियुस 3:14,15 और 16, क्योंकि, मेरा अनुमान है, कि यदि पिछले कुछ महीनों से आप इस यात्रा में हैं, तो 15वें, और शायद 14वें और 16वें वचन को आप रेखांकित कर चुके होंगे। ये वास्तव में केंद्रीय वचन हैं जो 1 तीमुथियुस को ढाँचा प्रदान करते हैं। एक तरह से, जिन ढाई अध्यायों को आज हम पढ़नेवाले हैं, ये उनके बुनियादी विचारों को व्यक्त करने में सहायता करते हैं। इसलिए, मैं चाहता हूँ कि शुरुआत हम 15वें पद से इस बात पर विचार करते हुए करें कि हम कौन हैं, विशेषकर कलीसिया और उसके महत्व, और फिर मसीह और उसकी उत्कृष्टता के बारे में विचार करते हुए।

हम कौन हैं.....

कलीसिया का महत्व.....

तो, 14वें पद से शुरुआत करते हैं। अब, थोड़ा सा संक्षेप में दोहराते हुए, पौलुस कहता है, *'' मैं तेरे पास जल्द आने की आशा रखने पर भी ये बातें तुझे इसलिये लिखता हूँ (यह पत्री का मूल उद्देश्य है) कि यदि मेरे आने में देर हो (यदि आपने अब तक इस पद को रेखांकित नहीं किया है तो अब कर लें; यह 1 तीमुथियुस का केंद्रीय पद है) कर लेंतो तू जान ले, कि (अब, इस बात पर ध्यान दें कि ये कलिसिया के तीन चित्रण है। पहला यह) परमेश्वर का घर, (दूसरा) जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है, और (तीसरा) जो सत्य का खंभा, और नेव है; उस में कैसा बर्ताव करना चाहिए। ''*

तो, ये कलीसिया के तीन चित्रण हैं। एक तरफ, <u>हम परमेश्वर के परिवार की अभिव्यक्ति हैं</u>, अक्षरशः, परमेश्वर का घराना। हम उसके परिवार की इकाई, उसकी संतान हैं। तो, मेरे घराने में मेरी पत्नी, और दो बेटे और दक्षिणपूर्वी से आनेवाली छोटी बच्ची हैं, और मेरा घराना मेरे नियमों पर चलता है। इसलिए, मेरे घराने के बच्चे इस समय सोने जाते हैं, और इस समय वे उठते हैं। खाने की मेज़ पर वे इस प्रकार का बर्ताव करते हैं; बच्चे अपनी माँ के साथ इस प्रकार का बर्ताव करते हैं। मेरे घर में इस तरह की बातें होती हैं। इस तरह, एक बहुत ही वास्तविक अर्थ में, 1 तीमुथियुस की पुस्तक के द्वारा पौलुस हमें यह समझाने में मदद कर रहा है, ''ठीक है, ये रहे वे नियम कि परमेश्वर के घराने में, परमेश्वर के परिवार का एक हिस्सा होने के नाते आपको कैसा बर्ताव करना है।'' हम, बहुत ही वास्तविक रुप में, एक कलीसिया होने के नाते, परमेश्वर के परिवार की अभिव्यक्ति हैं। तो, यह है पहला चित्रण।

इसके बाद है , दूसरा, <u>हम परमेश्वर की उपस्थिति का निवास स्थान हैं।</u> हम जीवते परमेश्वर की कलीसिया हैं। अक्षरशः, हम जीवते परमेश्वर की सभा हैं। यह पद बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस तरह की

भाषा यहूदी मसीहियों, बाइबल के पढ़नेवालों, को बस तुरंत ही बेथल नाम की एक जगह में ले जाती है जहाँ याकूब परमेश्वर से भेंट करता है, और कहता है, ''सचमुच, परमेश्वर इस स्थान में है।'' या कि मूसा और उस तंबू ले जाती है जहाँ हम मूसा को देखते हैं, ''जीवता परमेश्वर तंबू में तुम लोगों के मध्य वास करेगा। तंबू के माध्यम से उसकी उपस्थिति तुम्हारे साथ होगी।'' या कि, पुराने नियम में मंदिर के चित्रण जो कि मंदिर में परमेश्वर का अपने लोगों के मध्य अंतर्निवास था। यह उन जगहों में से एक है जहाँ तब आप नए नियम के पन्ने पलटते हैं, और आप पाते हैं कि परमेश्वर की उपस्थिति के लिए आपको किसी विशेष शहर या तंबू, या मंदिर, या किसी विशिष्ट जगह जाने की ज़रुरत नहीं है।

2 कुरिन्थियों 6:16 में पौलुस कलीसिया कें सदंर्भ में कहता है कि ''.....हम तो जीवते परमेश्वर का मन्दिर हैं.....।'' एक कलीसिया के रुप में हम उसका मंदिर हैं। इफिसियों 2:22, '' जिस में तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास स्थान होने के लिये एक साथ बनाए जाते हो।'' तो, ज़रा उस भाषा को सुनिये। एक कलीसिया के रुप में हम परमेश्वर का निवास स्थान हैं। परमेश्वर के लोगों की एक सभा के रुप में, हम उसका निवास स्थान हैं। क्या आप इस बात को महसूस करते हैं कि हमारा इस तरह से जुटना, परमेश्वर के लोगों की सभा के रुप में जुटना, जैसा कि हम इस समय कर रहे हैं, कितना महत्वपूर्ण है, कि हम सब एकजुट हैं और परमेश्वर हमारे बीच में हैं? हम उसके घर में उसकी आराधना कर रहे हैं। हम उसके वचन सुन रहे हैं। हम बस उसकी मेज़ की ओर जानेवाले हैं। कलीसिया परमेश्वर का निवास स्थान है।

जैसे कि इतना काफी नहीं था, तीसरा हिस्सा, पौलुस कहता है कि हम परमेश्वर के वचन के संरक्षक हैं। वह कहता है कि हम '' *सत्य का खंभा, और नेव है।''* अब, इसका क्या मतलब है? अच्छा, एक पल के लिए स्वयं को इफिसुस में रखें और दुनियों के 7 प्राचीन अजूबों में से एक, डायना के मंदिर को देखें। यह चमचमाती हुई, सैकड़ों ईओनिक स्तंभों पर टिकी संगमरमर की छत। आपके दिमाग में यह छवि आती है। पौलुस वहाँ की कलीसिया से कहता है, ''एक कलीसिया के रुप में , तुम, परमेश्वर के सत्य का स्तंभ और नेव हो।''
इसका क्या अर्थ है? अच्छा, ये स्तंभ क्या काम करते हैं? ये खंभे क्या काम करते हैं? सत्य का खंभा और नेव होने का क्या अर्थ है? अब, ज़रा इसे देखें। कलीसिया, आपका यह सौभाग्य और उत्तरदायित्व है कि एक ओर, आप परमेश्वर के वचन का संरक्षण करें; इसे हम कस कर थामें। यही वह काम है जो खंभे और नेव करते हैं; वे किसी चीज़ को मज़बूती से पकड़ते हैं। यही काम हम कलीसिया सदियों और पीढ़ियों से करते चले आ रहे हैं। एक कलीसिया के रुप में, हम पर उत्तरदायित्व है कि हम परमेश्वर के वचन को कस कर मजूबती से पकड़े रहें। पहली सदी में झूठी शिक्षा से इसका संरक्षण; इक्कीसवीं सदी और आनेवाली सभी सदियों में इसका संरक्षण। एक कलीसिया के रुप में हमारी ज़िम्मेदारियों में से एक

ज़िम्मेदारी है यह सुनिश्चित करना कि अपनी संस्कृति में हम वचन पर टिके रहें; कि हम सफलतापूर्वक इसे अगली पीढ़ी को दें, यही 2 तीमुथियुस की पुस्तक में लिखे वचन का सार है।

इसलिए, हम इसे मज़बूती से पकड़ते हैं, और फिर हम परमेश्वर के वचन की उद्घोषणा करते हैं; हम उसे ऊँचा उठाते हैं। स्तंभ भी यही काम करते हैं, वे किसी चीज़ को मज़बूती से पकड़े रहते हैं, और उसे ऊँचा उठाते हैं। और अपने विश्वास के परिवार से हमे सबसे अधिक इसी बात की आशा होती है। यह हमारा सौभाग्य और उत्तरदायित्व है। हम किसी मनुष्य के विचारों को ऊँचा उठाना नहीं चाहते। हम मनुष्य की नवरचना को ऊँचा उठाना नहीं चाहते। हम अपनी रचनात्मकता, हमारी सम्पत्ति, या हमारी चीज़ों को ऊँचा उठाना नहीं चाहते। हम केवल एक ही चीज़ को ऊपर उठाना चाहते हैं; वह है परमेश्वर का वचन। हम चाहते हैं कि लोग इसे पुरज़ोर आवाज़ में उद्घोषित होता देखें और सुनें। संरक्षित, उद्घोषित, देह में मज़बूती से पकड़े, और देह से ऊँचा उठाए।

तो, यह हैं हम, और ये हैं वे काम जो हम करते हैं। ज़रा इसे भीतर सोखने दीजिए। एक कलीसिया के रुप में हम परमेश्वर के वचन के संरक्षक हैं, और परमेश्वर की उपस्थिति का निवास स्थान हैं। उसके परिवार की अभिव्यक्ति। परमेश्वर, जिसने कहा, और चीज़ें आस्तित्व में आईं। परमेश्वर, जो तारों को नाम से बुलाता है और राष्ट्र जिसके हाथों में हैं। परमेश्वर जो पूरे ब्रह्माण्ड का स्वामी और शासक है, श्रद्धायुक्त भय को प्रेरित करनेवाला सत्यः यह परमेश्वर हमारे मध्य वास करता है। कितना अद्भुत सत्य कि इस समय हम जो करने के लिए एकत्रित हुए हैं वह कोई दैनिक या साधारण बात नहीं है। एक कलीसिया के रुप में, हम जीवते परमेश्वर की सभा, उसका निवास स्थान हैं। 15वें पद को अगर अलग तरह से कहें, तो पौलुस कह रहा है, ''परमेश्वर इस घर में है।'' वह घर में है, और इसी कारण, कि जब आप 1 कुरिन्थियों 14 में जाते हैं, आप पौलुस को यह बताते हुए देखते हैं कि कैसे एक अविश्वासी कलीसिया की सभा में किस प्रकार आएगा, अपने मुँह के बल गिरेगा, और चिल्ला कर कहेगा, ''सचमुच परमेश्वर तुम्हारें मध्य है।''

हर सप्ताह, मैं इस बात के लिए प्रार्थना करता हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ कि इस जगह परमेश्वर से अनजान लोग आएंगे और कलीसिया में परमेश्वर की उपस्थिति को पा कर, गिर कर कहेंग, ''परमेश्वर तुम्हारें बीच है।'' मैं प्रार्थना करता हूँ कि ऐसा अभी हो, शायद आप में से कुछ लोगों के साथ जो परमेश्वर को नहीं जानते हैं।

मसीह की उत्कृष्टता .....

तो, यदि आप बस इतने से तुष्ट नहीं हैं तो 16वें पद में आएँ। तो, कलीसिया के महत्व को देखें, और फिर मसीह की उत्कृष्टता को देखें। इसलिए, पौलुस कहने लगता है। 16वें पद में वह कहता है, '' और इस में सन्देह नहीं, कि भक्ति का भेद गम्भीर है.....।''

अब, ध्यान देने योग्य कुछ बातें। जब पौलुस को ''भेद'' के बारे में बातचीत करते देखते हैं, याद रखनेवाली एक बात, कि वह किसी अनसुलझे भेद या खोजे जानेवाले किसी सूराख की बात नहीं कर रहा है। वह एक ऐसे भेद के बारे में कह रहा है जो किसी समय में सबसे छिपा था और अब प्रकाशित हो चुका है। वह भेद के बारे में इसी रीति से कह रहा है। तो, वह यहाँ पर एक ऐसे भेद की बात कर रहा है जो पहले कुछ समय के लिए भेद था, और अब सब पर प्रकाशित है : वह है भक्ति का भेद।

अब, आप उस शब्द पर घेरा लगा सकते हैं। 1 तीमुथियुस की पुस्तक में 9 बार, वह इस शब्द, ''भक्ति'' का प्रयोग करता है। यह उसके मनपसंद शब्दों में से एक है; शायद इस पूरी पत्री के बुनियादी विषयों में से एक। परमेश्वर पर केंद्रित जीवन का चित्रण करने के लिए वह जिस प्रकार इस शब्द का प्रयोग करता है, वह परमेश्वर के बोध से आता है। वह व्यक्ति, जब वे सुबह उठते हैं और दिनचर्या से गुज़रते हैं, और फिर रात में सोने चले जाते हैं, अपनी सोंच, अपनी योजनाओं में, अपने कामों में, अपने बोलने–चालने में, और दूसरे के साथ अपने संबंधों में परमेश्वर–केंद्रित और परमेश्वर से परिपूर्ण होते हैं। वहाँ यह भक्ति, परमेश्वर पर केंद्रित होना, परमेश्वर का बोध होना है जो उनके द्वारा किए जानेवाले हर काम में बस व्याप्त हो जाती है। इसलिए, पौलुस कहता है, ''*... भक्ति का भेद गम्भीर है... ।*''

अच्छा, भक्ति का भेद क्या है? आप 16वें पद में जाएँ, ठीक उसके बाद, और पौलुस ''वह'' शब्द कहता है। ''*वह जो शरीर में प्रगट हुआ, आत्मा में धर्मी ठहरा, स्वर्गदूतों को दिखाई दिया, अन्यजातियों में उसका प्रचार हुआ, जगत ने उस पर विश्वास किया गया, और महिमा में ऊपर उठाया गया।*'' भक्ति का भेद कौन है? मसीह! इस तरह, भक्ति का भेद मसीह प्रकाशित करता है, अर्थात्, मसीह ही भक्ति का खुलना और भक्ति का प्रकाशित होना है। मसीह ही परमेश्वर पर केंद्रित होने की अभिव्यक्ति है। तो, भक्ति के भेद को मसीह किस रीति से प्रकाशित करता है? वह परमेश्वर के तेज को प्रदर्शित करता है। ज़रा इस व्याख्या को सुनें : पुत्र की तरह शारीरिक रुप में प्रकट हुआ, ''शरीर में प्रगट हुआ....।'' वह शरीर में प्रगट परमेश्वर है। पवित्र आत्मा ने उसकी पुष्टि की है। धर्मी ठहराने की पूरी तस्वीर हमें इस बात की ओर इशारा कर रही है कि कैसे आत्मा ने परमेश्वर के पुत्र की परमेश्वर की ओर से होने की पुष्टि की। मत्ती 3 में बपतिस्मा का वह दृश्य याद है? यीशु को बपतिस्मा दिया गया था। यीशु द्वारा किया हर आश्चर्यकर्म और सामर्थ्य के कार्य, और फिर, आखिरकार, उसका कब्र से जिलाया जाना, उस पर आत्मा की सामर्थ्य के होने के प्रमाण था।

रोमियों 1:4 कहता है, वह '' ...पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।'' रोमियों 8:11, '' और यदि उसी का आत्मा जिस ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया .....।'' आत्मा के द्वारा प्रमाणिकरण। पुत्र के रुप में शरीर में प्रगट हुआ। स्वर्गदूतों को दिखाई दिया। स्वर्गदूतों ने उसे देखा और उसका आनन्द लिया। उसके जन्म पर दूतों ने गीत गाया। उन्होंने उसके जिलाये जाने की घोषणा की। वे उसके स्वर्गारोहण के समय उपस्थित थे। स्वर्गों में उसे देखा गया और उसकी प्रशंसा हुई; पूरे जगत में सभी राष्ट्रों में आज तक उसका प्रचार होता है। राष्ट्रों के मध्य, मसीह जगत के उद्धारकर्ता के रुप में घोषित किया जा रहा है।

ज़रा इसके बारे में सोचें। आज भी, अब भी, संसार भर में उस पर विश्वास किया जाता है। मसीह संसार को बचाता है। इस समय, एशिया और अफ्रीका और यूरोप और अमेरीका में मसीह को उद्धारकर्ता के रुप में विश्वास करनेवाले लोग हैं। इसलिए, सुबह बिस्तर से उठते ही आपकी सुबह में स्फूर्ति हो, और आप सोचें, कि ''परमेश्वर इस समय बचा रहा है। वह अंधी आँखें खोल रहा है। वह लोगों को मृत्यु से अनन्त जीवन की ओर ला रहा है। आज का दिन बहुत अच्छा होगा। आज का दिन वाकई बहुत ही अच्छा दिन होगा।''

वह यही तो कर रहा है। लोग उसे अपना प्रभु मान रहे हैं। प्रार्थना करें कि आपके यहाँ होते हुए ही ऐसा हो जाए। वह जगत का उद्धारकर्ता है और पूरे ब्रह्माण्ड का राजा है, जो महिमा में उठाया गया और पिता की दाहिनी ओर है। इसलिए, पौलुस कहता है, ''यह मसीह है।'' पौलुस केवल यह नहीं बता रहा है कि भक्ति के भेद को प्रकाशित करनेवाला और परमेश्वर के ऐश्वर्य को प्रदर्शित करनेवाला यह कौन है। वह यह कह रहा है कि, ''कलीसिया, जानो कि तुम्हारे लिए इसका क्या अर्थ है। जानो कि आपके जीवन में भक्ति का क्या अर्थ है। जानो कि कलीसिया में भक्ति का क्या अर्थ है। यह मसीह, जो पुत्र के रुप में शरीर में प्रगट हुआ, आत्मा के द्वारा – जिसने उसे मुर्दों में से जिलाया – निर्दोष ठहराया गया, स्वर्गदूतों के मध्य उसकी स्तुति हुई, पूरे जगत में जिसे उद्धारकर्ता और ब्रह्माण्ड का राजा घोषित किया गया। वह मसीह आपके भीतर वास करता है।''

ओह, कुछ पलों के लिए नोट्स लिखना छोड़ कर बस इसे अपने भीतर सोख कीजिए। मसीही, आप जिस भी सीट पर बैठे हैं, यह मसीह आपके भीतर रहता है। ओह, इस बात से उत्साहित हो जाइए, भाइयों और बहनों। कठिन समय से गुज़र रहे भाइयों और बहनों, जब आप कमज़ोर महसूस करते हैं, यह मसीह आपको बल देता है। संशय में पड़े भाइयों और बहनो, जो नहीं समझ पा रहे हैं कि अपने परिवार में या अपनी नौकरी में या किसी भी बात को लेकर क्या करना है, यह जान लें : यह मसीह आपके भीतर की शांति है। इस जगत के मारे और चोट खाए भाइयों और बहनों, यह मसीह आपके भीतर की चंगाई है। संकट के समय से गुज़र रहे भाइयों और बहनों, जो नहीं जानते कि वे कब अपनी

परिस्थिति से पार पा सकेंगे, हियाव रखेंः ''क्योंकि जो तुम में है, वह उस से जो संसार में हैं, बड़ा है।'' जब मसीह आपमें है तो डरने का कोई कारण ही नहीं हैं

परमेश्वर पर केंद्रित जीवन मसीह द्वारा सशक्त जीवन का परिणाम है। इसलिए, ''मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है।'' मसीह हमे परमेश्वर पर केद्रिंत करता है। पौलुस यही कह रहा है। इसलिए चलिए सब इसे सोख लें, और तब जानें कि कलीसिया होना क्या मायने रखता है। हम परमेश्वर का घराना, परमेश्वर के रहने का स्थान, परमेश्वर के वचन के संरक्षक हैं, जिसमें परमेश्वर का पुत्र वास करता है। ये सारी बातें हमारे जीने के ढंग को पूरी तरह बदल देती हैं। ये सारी बातें एक कलीसिया के रुप में हमारी कार्यशैली को बदल देती हैं। पूरे जगत में कलीसिया जैसा और कुछ नहीं है। पूरे इतिहास में अक्षरशः, ऐसी कोई दूसरी देह नहीं जो इतना महत्व रखती है जितना की आज कलीसिया रखती है और सदा रखेगी। ओह, यह कितनी भली बात है।

हमारी अगुवाई किस प्रकार होती है.....

तो, यह बुनियादी है। यह पूरी पुस्तक और इन ढाई अध्यायों के लिए बुनियादी है। इसके आधार पर अब, परमेश्वर कहता है, ''कलीसिया के महत्व और प्रतिष्ठा तथा मसीह की उत्कृष्टता को देखते हुए, तुम्हें मेरे घर में कुछ ऐसे बर्ताव करना है।'' यह रहा कि हमारी अगुवाई कैसे होती है, और यह बात हमें 1 तीमुथियुस 3 के आरंभ में ले जाती है जहाँ परमेश्वर कलीसिया में अगुवाई के दो प्राथमिक पदों की रुपरेखा देता है। अगुवाई के संदर्भ में इन दोनो पदों को सही और बाइबल पर आधारित रखना शेष सभी बातों को प्रभावित करता है। इस समय, हो सकता है कि आप उदासीन सा होने लगें।

यह जान लें : कलीसिया की अगुवाई द्वारा कलीसिया का हरेक सदस्य प्रभावित होता है। कलीसिया के धर्मी अगुवों और धर्मी पास्टरों के कारण आप में से बहुत से लोग मसीह के साथ बहुत अद्भुत और बेहतर संबंध बना चुके हैं। आपके जीवन में उन लोगों का बहुत अधिक, और अनन्त प्रभाव पड़ा है। मैं जानता हूँ कि आपमें से कुछ लोग एसे भी हैं जिन्हें कलीसिया के अगुवों या पास्टरों के कारण कोई ठेस पहुँची है। मेरा अन्दाज़ा है कि शायद कुछेक को तो, या कि बहुत से लोगों को, किसी समय ऐसा भी लगा हो कि जैसे आपको कलीसिया से, या कि पूरी मसीहत से ही बाहर धकेला जा रहा है, जिसका कारण है वह अगुवाई जो आपने कलीसिया में देखी है।

यही वह जगह है जहाँ हमें इस बात का अहसास होता है कि कलीसिया की अगुवाई का कलीसिया द्वारा सुसमाचार के प्रचार पर सीधा प्रभाव पड़ता है। यदि इस कलीसिया की, या किसी भी अन्य कलीसिया के अगुवों में परमेश्वर को लेकर और पवित्रता को लेकर और मिशन को लेकर लापरवाही से भर रवैया है, तो उसका उस कलीसिया पर बहुत ही विनाशकारी प्रभाव पेड़गा, और इसका उस

कलीसिया के आसपास के उन लोगों पर विनाशकारी पड़ेंगे जिन्हें सुसमाचार को सुनने और देखने की ज़रुरत है। इसके कुछ विनाशकारी प्रभाव होंगे। इसके पलट, यदि कलीसिया के अगुवे परमेश्वर को लेकर उत्साह से भरे हैं और पवित्रता को लेकर और उत्साह से भरे हैं और मिशन को लेकर उत्साह से भरे हैं, तो इसका उस कलीसिया पर और उस कलीसिया के द्वारा सुसमाचार के प्रचार पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। इसलिए, हमें सही रवैया रखना है। कलीसिया की सेहत और सुसमाचार का प्रचार का बहुत बड़ा अंश कलीसिया के अगुवों की विश्वासयोग्यता पर निर्भर करता है। इसलिए, परमेश्वर क्या करता है, 1 तीमुथियुस 3 में वह कलीसिया की अगुवाई में दो पद देता है।

पुरनिये : कलीसिया में सेवक–अगुवे।

पहला पद है कि पुरनिये का। पुरनियों के रुप में परमेश्वर कलीसिया को सेवक–अगुवे देता है। पहले और दूसरे पद में, पौलुस यहाँ ''अध्यक्ष'' शब्द का प्रयोग करता है, और नए नियम में पुरनिये और पास्टर दोनो के लिए प्रयोग किया गया है। वचन में पुरनिये/पास्टर/अध्यक्ष शब्द का प्रयोग जिन लोगों के लिए किया गया है वे सब एक ही पद से संबंधित हैं। वे मसीह के अधिकार के अधीन अगुवाई करते हैं।

तो, मसीह, स्पष्ट रुप से, कलीसिया का सिर है। कलीसिया पर मसीह का अधिकार है। वह परमेश्वर द्वारा चुना गया प्रमुख गडरिया है, लेकिन वह अपनी कलीसिया की प्रत्यक्ष और व्यवहारिक रुप से अगुवाई करता कैसे है? वह यह काम उन गडरियों के द्वारा करता है जो परमेश्वर द्वारा चुने गए हैं, और जिन्हें परमेश्वर ने अपनी आत्मा के द्वारा बड़ा किया है। उनमें आत्मा के कामों द्वारा, उनमें सेवा करने की चाहत होती है। इसी शब्द का प्रयोग वह यहाँ पहले पद में करता है : ''..... *जो अध्यक्ष होना चाहता है.....* /'' देखा आपने? एक पास्टर के रुप में सेवा करने की इच्छा होनी चाहिए। यह अपने स्वार्थ के चलते मने में किसी ताकत या पदवी की इच्छा नहीं है। यह मसीह की देह में सेवा करने की इच्छा है, मसीह की देह की देखरेख की इच्छा, और मसीह के अधिकार के नीचे कलीसिया की अगुवाई करने की इच्छा है।

अब, बस इसलिए कि किसी में ऐसा करने की इच्छा है, ज़रुरी नहीं कि उसका अर्थ यही हुआ कि ''चलो ठीक है फिर, उन्हें पुरनिये बनना ही चाहिए।'' वे कलीसिया द्वारा प्रमाणित किए जाने चाहिए। हम नए नियम में मसीह की देह को उठाते हुए, भेजते हुए, और विविध तरीकों से पुरनियों को प्रमाणित करने की बात देखते हैं, लेकिन किसी व्यक्ति में पुरनिये के गुणों, पुरनिये में अगुवाई की योग्यता की पहचान कलीसिया करती है और एक पुरनिये के रुप में उसकी पुष्टि करती है। इस कलीसिया में एक प्रक्रिया है जिससे हम हर साल गुज़रते हैं। इस साल हमने वसंत में किया था, जहाँ हमने पूरी तल्लीनता से प्रार्थना की और परमेश्वर से पूछा कि अपनी आत्मा के द्वारा किसे उठाया है और उसके

भीतर इस इच्छा को डाला है। एक कलीसिया के रुप में, हम, एक प्रक्रिया से गुज़रते हैं; हम उन लोगों की पुष्टि करते हैं जिन्हें परमेश्वर ने तैयार किया है। कोई भी तब तक पुरनियें के पद पर नहीं आता जब तक कि कलीसिया यह न कहे कि हमने उसकी पुष्टि की है, और इब्रानियों की तर्ज़ पर, हम यह कह रहे हैं कि हम उसकी अगुवाई में चलेंगे। तो, वह एक अगुवा है। मसीह के अधिकार में वे अगुवाई करते हैं।

तब, वे मसीह की देह चरवाही करते हैं। एक पास्टर यही होता है; वह एक चरवाहा है, परमेश्वर के लोगों की देखरेख करता चरवाहा। इफिसुस के इन्हीं पुरिनयो को पौलुस ने प्ररितों 20:28 में कहा था, उसने कहा था, ''इसलिये अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो, जिस से पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है, कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उस ने अपने लोहू से मोल लिया है।'' यह एक बहुत ही प्रभावशाली कथन है। जब मैं परमेश्वर द्वारा स्वयं को इस कलीसिया, उसके लहू से मोल ली देह के कई पास्टरों में से एक होने के लिए चुने जाने की बात सोचता हूँ, तो मैं सोचता हूँ कि यह एक बहुत ही बड़ी ज़िम्मेदारी है। फिर, इसके ठीक बाद पौलुस यह कहता है, ''मैं जानता हूँ, कि मेरे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िए तुम में आएंगे, जो झुंड को न छोड़ेंगे,'' और झुंड को तबाह करने का प्रयास करेंगे। इसलिए, झुंड की रखवाली करो; एक गडरिया यही करता है। पिछले साल पुरनियों की संख्या को बढ़ाने के पीछे के कारणों में से एक कारण यह भी था, क्योंकि हमारे पास बहुत से लोग हैं जिनकी हमें चरवाही और देखरेख करनी है। इसलिए, हमने उनकी संख्या को बढ़ाया है।

तो इस समय चरवाही इस तरह होती है। हमने पहले भी उल्लेख किया था, और हर उस व्यक्ति को प्रोत्साहित करना चाहेंगे जो किसी छोटे समूह का हिस्सा नहीं है, यदि आप मसीह के अनुयायी या इस देह के सदस्य हैं, तो ऐसे भाइयों और बहनों के समूह के साथ जुड़ने को अपनी प्राथमिकता की सूची में सबसे ऊपर रख लें जो आपको मसीह की ओर जाने और यहाँ व धरती के कोने–कोने में सुसमाचार का प्रचार करने के लिए प्रेरित कर सकें। इसलिए, किसी छोटे समूह से जुड़ जाएँ। फिर, हमारा हर छोटा समूह किसी विशेष पुरनिये की देखरेख के अंतर्गत है। तो इस तरह, हर पुरनिये के तहत कई छोटे समूह हैं जिनके के लिए वे प्रार्थना कर रहे हैं। वे उन समूहों के अगुवों की पासबानी से जुड़ी किसी भी मदद के लिए हमेशा उपलब्ध रहते हैं, जो उन लोगों के लिए मददगार हो। इस तरह, वे देह के हर सदस्य को पासबानी देखरेख देने का प्रयास कर रहे हैं; पुरनियों का यही काम होता है। वे मसीह की देह की चरवाही करते हैं।

अब, वे इस तीसरी बात के द्वारा उनकी चरवाही और अगुवाई करते हैं। वे मसीह के वचन की शिक्षा देते हैं। इस तरह, किसी भी चरवाहे का बुनियादी काम भेड़ों को सहलाना नही है, बल्कि उन्हें भोजन कराना है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि देखरेख और करुणा ज़रुरी नहीं हैं। वे भी ज़रुरी हैं।

हमने बस हाल ही में उस पर बातचीत की है लेकिन आप 1 तीमुथियुस 3 को देखें और 1 तीमुथियुस 3:1–7 में एक को छोड़ बाकी सभी योग्यताएँ चारीत्रिक गुण हैं। उसमें केवल एक ही है जो कि कुछ करने की सामर्थ्य से जुड़ी योग्यता है, और यह दूसरे पद के अंत में हैं जब वह कहता है कि उसे ''सिखाने में निपुण'' होना चाहिए। तो, यह रही मुद्दे की बात। कलीसिया में बहुत से धर्मी पुरुष हैं लेकिन वे इसलिए पुरनिये नहीं बनते क्योंकि उन्हें सिखाने का वरदान नहीं मिला है। अब, किसी भी पुरनिये को सिखाने में निपुण क्यों होना चाहिए? ज़रा इसके बारे में सोचें।

मसीह कलीसिया का सिर है। वह अपने वचन के द्वारा कलीसिया की अगुवाई करता है। इसलिए, पुरनियों के अगुवाई का अधिकार, अगुवाई की विश्वसनीयता, और अगुवाई की योग्यता इस वचन की बुनियाद से बंधी है। इसलिए इब्रानियों 13:17 जैसे पदों में वचन बेखटके कह सकता है कि ''अपने अगुवों को मानो; और उनके अधीन रहो....।'' यह बात हमें लगती है, विशेषकर हमारी संस्कृति में। आज्ञा मानो? उनके अधीन रहो? इसका क्या अर्थ है? अच्छा, ज़रा इस पर विचार करें। यदि कलीसिया के अगुवे मसीह का वचन सिखा रहे हैं, तो उनकी आज्ञा मानने और उनके अधीन रहने का मतलब मसीह की आज्ञा मानना और मसीह के अधीन रहना हुआ। अब, कुंजी यह है, वहाँ पर एक बड़ा सा ''यदि'' है। पुरनियों को वचन की शिक्षा देनी होगी, और यही कुंजी है।

आज हम कलीसिया की अगुवाई के लिए तरह–तरह की योग्यताएँ देखते हैं। आपको उद्यमी होना चाहिए। आपको दिलचस्प होना चाहिए। आपका व्यक्तित्व बहुत करिश्माई होना चाहिए। आपके पास ज्ञान और अनुभव होना चाहिए। सूची इतनी लंबी है कि खत्म ही नहीं हो पा रही है, लेकिन प्रोत्साहन की बात यह है, कि इनमें से किसी भी गुण के बारे में यहाँ पर नहीं लिखा है। यहाँ बस इतना लिखा है कि उनमें परमेश्वर के वचन को सही तरह से बताने की विश्वासयोग्यता होनी चाहिए। इसलिए, इस कलीसिया में अगुवाई करने का मेरा, और मेरे साथ बाकी लोगों को अधिकार पूरी तरह से वचन को कहने से जुड़ा है। जब हमारी अगुवाई यह वचन कर रहा है, तो हम भले हैं। यदि यह किसी आदमी की राय, आदमी के विचार, आदमी की युक्तियाँ, या आदमी की रचनात्मकता है, तो हम गलत रास्ते पर जा रहे हैं, और हमें उस रास्ते पर नहीं जाना चाहिए। मसीह इसी रीति से अगुवाई करता है, मसीह के वचन को सिखानेवाले पुरनियों के द्वारा।

इसलिए, मसीह के अधिकार के अंर्तगत वे अगुवाई करते हैं, वे मसीह की देह की चरवाही करते हैं, वे मसीह का वचन सिखाते हैं, और, सिखाते समय, वे मसीह के चरित्र को आदर्श मानते हैं। इस प्रकार, हमारे पास चारीत्रिक योग्यताओं की एक सूची है। समय के अभाव के कारण हम उन सभी का अध्ययन नहीं करेंगे, लेकिन स्पष्ट है कि मसीह जैसा चरित्र का होना पुरनिये के लिए ज़रुरी है।

तो, आप इब्रानियों 13:7 को लिख सकते हैं। जब इब्रानियों का लेखक वहाँ कहता है ''जो तुम्हारे अगुवे थे, और जिन्होंने तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया है, उन्हें स्मरण रखो...।'' तो, जो अगुवे आपको वचन सिखाते हैं उनके बारे में सोचें। वह कहता है, ''ध्यान से उन के चाल–चलन का अन्तर देखकर उन के विश्वास का अनुकरण करो।'' तो, बस इतना ही करना है। कलीसिया को पुरनियो/पास्टरों/अध्यक्षों को किसी भी रीति से सर्वगुण सम्पन्न नहीं समझना चाहिए। मैं भी किसी भी रीति से सिद्ध नहीं हूँ, लेकिन मैं अपने पुरनियों/पास्टरों/अध्यक्षों को देख कर कह सकता हूँ कि ''मैं उनका चाल–चलन देख सकता हूँ; और उनके विश्वास का अनुकरण करना चाहता हूँ।''

व्यक्तिगत रुप से, यही कारण है कि, जब हमारी कलीसिया पुरनियों के चयन की प्रक्रिया से गुज़र रही होती है, तब हम उसमें पूरे परिवार को भी शामिल करते हैं। केवल घर के लोग ही नहीं, वरन् समुदाय के बाहर के लोग भी। यही कारण है कि हम, यहाँ पुरनिये बनने से पहले, हम उनके नाम स्थानीय अखबार में छपवाते हैं, और उसके माध्यम से कहते हैं कि, ''हम जानना चाहते हैं कि क्या कोई शहर में इस व्यक्ति के बारे में ऐसा कुछ आपत्तिजनक जानता है जो कलीसिया में इनके द्वारा मसीह के प्रतिनिधित्व करने पर प्रश्न खड़ा करता है।'' क्योंकि ऐसा करना महत्वपूर्ण है। हर अभीष्ट है कि कलीसिया के पुरनिये इसी रीति से मसीह के चरित्र को दर्शाएँ।

डीकन (सेवक) : कलीसिया में अगुवाई करते सेवक

तो, यह पहली श्रेणी है। पुरनिये कलीसिया में सेवक अगुवे होते हैं; और 8वें पद में दूसरी श्रेणी शुरु होती है : सेवक : कलीसिया में अगुवाई करते सेवक। वह पद जिसके बारे में प्रेरितों 6 और नए नियम के दूसरे हिस्सों में बताया गया है, वे जो पुरनिये के साथ कार्य करते हैं, वचन की सेवकाई में सहायता देते हैं, देह की अन्य विशिष्ट ज़रुरतों को ध्यान में रखते हैं, जैसे कि विधवाओं की देखरेख करना, थोड़े ही समय में, 1 तीमुथियुस 5 में हम इस पर गहराई से देखनेवाले हैं। यहाँ पर दी योग्यताएँ सचमुच चारीत्रिक हैं। उन्हें अपने जीवनों द्वारा मसीह को ऊँचा उठाना चाहिए, और उनकी अगुवाई द्वारा कलीसिया की उन्नति होनी चाहिए। सेवक कलीसिया की उन्नति के लिए होते हैं; वे कलीसिया में एकता रखते हैं, पुरनियों की मदद और देह की देखरेख करते हैं। तो, इस तरह, दो पद होते हैं।

किसी भी स्थिति में, चाहे वह कितनी ही विकट क्यों न हो, कितनी ही चुनौती भरी क्यों न हो, अगुवाई के लिए बाइबल के मानकों से समझौता नहीं कर सकते हैं। मेने यह कहते सुना है, ''अच्छा, वह अगुवा इतना प्रतिभाशाली है या गुणवान या योग्य है, आपको नहीं लगता कि इन सभी योग्यताओं के न होने पर भी उन्हें अगुवाई करने देना चाहिए?''उत्तर है ''न''। परमेश्वर अपने अगुवों और देह में पवित्रता को बहुत गंभीरता से लेता है। इन शब्दों को कहते समय, मेरे भीतर एक भय छा गया है क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं इन बातों के लिए जवाबदेह हूँ।

इसलिए, वह हमे भक्ति के भेद की ओर संकेत करती है, और मैं उससे यह विनती करने के लिए विवश होता हूँ कि वह मेरे भीतर ये बातें पैदा करे। इसलिए, मेरे लिए प्रार्थना करें। पुरनियों के लिए प्रार्थना करें। सेवकों के लिए प्रार्थना करें। कलीसिया की अगुवाई के लिए प्रार्थना करें। छोटे समूहों के अगुवों के लिए और कलीसिया की विभिन्न सेवकाइयों के अगुवों के लिए प्रार्थना करें। हमारे अगुवों में इन बातों के लिए प्रार्थना करें, क्योंकि, जैसा कि अगले कुछ पदों में पौलुस कहता है और जिस पर हम पहले भी चर्चा कर चुके हैं, इन भाइयों और बहनों पर परमेश्वर के घराने की ज़िम्मेदारी है।

हम क्या करते हैं.....

जो हमें, अब 1 तीमुथियुस 4 की ओर ले जाती हैः हम क्या करते हैं। अब, जब मैं कहता हूँ कि हम क्या करते हैं, यहाँ, मैं चाहता हूँ कि आप इस पर अलग–अलग स्तर पर सोचें, क्योंकि जब चौथे अध्याय में आते हैं, तब आपको पौलुस द्वारा तीमुथियुस को दिए विशिष्ट निर्देश मिलते हैं और संभावित रुप से तीमुथियुस के आसपास के अन्य पुरनियों पर लागू होते थे, लेकिन वह सचमुच बहुत ही विशिष्ट हैं। लेकिन उसी समय, पौलुस जो कह रहा है, अवश्य ही, एक तरह से, पूरी कलीसिया पर भी लागू होता है। इसलिए, एक तरह से, जब मैं 1 तीमुथियुस 4 को पढ़ता हूँ, इस कलीसिया का कम उम्र पास्टर होने के नाते, तब मुझे ऐसा लगता है कि वह सीधा मेरी ओर आ रहा है। उसी समय, यह केवल मेरे लिए नहीं है, यह, स्पष्ट रुप से, जो हम मिलकर करते हैं उसके बारे में है। इसलिए, पौलसु जो कहता है कि हम करते हैं, चलिए उस पर विचार करें। चलिए इन दो स्तरों के बारे में विचार करें।

हम कलीसिया में त्रुटियों का पता लगाते हैं।

पहली बात, हम कलीसिया में त्रुटियों का पता लगाते हैं। पौलुस ने जो बात चौथे अध्याय की शुरुआत में कही थी, चलिए मैं वह याद दिलाता हूँ : कलीसिया में त्रुटियों का पता लगाएँ। ''परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है, कि आने वाले समयों में कितने लोग भरमाने वाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएंगे। यह उन झूठे मनुष्यों के कपट के कारण होगा, जिन का विवेक मानों जलते हुए लोहे से दागा गया है।'' तो यह रही मुख्य बात। इफिसुस में, कुछ ऐसे लोग थे जो कलीसिया की सच्ची शिक्षा पर सवाल उठा रहे थे, और पौलुस कहता है कि ''तुम्हें इन बातों के प्रति सचेत रहना है। तुम्हें दुष्टात्माओं की शिक्षा, धोखे की आत्मा और दुष्टों की शिक्षा के प्रति सचेत रहना है।'' धोखे में न आओ। ये झूठी शिक्षाएँ सीधा नरक से आई हैं। ये दुष्टात्मा के स्रोत से है। दुष्टात्मा की ये शिक्षाएँ सीधा कपटी शिक्षकों के द्वारा फैलाई जा रही हैं। ये सब ''...झूठे मनुष्यों के कपट के कारण..., जिन का विवेक मानों जलते हुए लोहे से दागा गया है।'' अक्षरशः, वे पुरुष और स्त्रियाँ, जो सत्य के प्रति इतने संवेदनहीन हो चुके हैं कि वे झूठ का प्रचार करते समय कहते हैं कि

यह सत्य है। सातवाँ पद कहता है कि ''वे ''अशुद्ध और बूढियों की सी कहानियों'' को फैला रहे थे। वे अंधविश्वास से भरी कहानियों का प्रचार कर रहे थे।

अब, यहाँ समझने में गलती न करें। ये वे शिक्षक नहीं थे जो कलीसिया में उठ कर कहते हैं ''मेरा विवेक दागा गया है। मेरे पास बताने के लिए ऐसी मूर्खता भरी बातें हैं जो सीधा नरक के गढ्ढे से आई हैं।'' जो बात इसे धोखा बनाती है वह है कि ये ऐसे लोग थे जिनसे सत्य सुनने की आशा में लोग उनकी ओर देखते थे। उन्होंने मुखौटा पहना हुआ था, जिसके कारण बातें और भी खतरनाक हो जाती हैं। इफिसुस के पुरनियों से बातचीत करते समय प्रेरितों 20:30 में जो बात पौलुस ने कही थी, उसके साथ इस बात को रखने पर यह सचमुच खतरनाक हो जाती है। उसने उनसे कहा था, कि ''तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी मेढ़ी बातें कहेंगे।'' पौलुस ने यह बात पुरनियों से कही थी। उसने कहा था, ''तुम में से कुछ लोग टेढ़ी मेढ़ी बातें कहेंगे।''

इस तरह, मंशा यह है कि, यहाँ 1 तीमुथियुस में जो हो रहा है वह यह है कि, उन झूठे शिक्षकों में कुछ पास्टर थे। वे कलीसिया में पुरनिये थे। यह समस्या तब भी थी और यह समस्या आज भी है। यह तब भी प्रबल थी और आज भी प्रबल है। कलीसियाओं में सर्वत्र फैली बुरी थियोलॉजी जिसका बाइबल से कोई लेना–देना नहीं है। आप कहते हैं, ''अच्छा, ऐसा कहनेवाले आप कौन होते हैं कि आप धर्मशास्त्र की जो शिक्षा देते हैं वह सही है?'' खैर, सब बातों को वचन से परख कर देख लें। हम इस पर बातचीत करनेवाले हैं।

समृद्धि थियोलॉजी में आपको यह बात दिखती है। यह विचार कि मसीह पर विश्वास करने पर मनचाही धन–दौलत और सेहत मिलते हैं। कई बार इसे ठीक इन्हीं शब्दों में कहा जाता है, या कई बार प्रकार की सभा में इसे भौतिकवादी मसीहियों द्वारा अपना लिया जाता है। फिर एक सर्वाक्षावादीय धर्मशास्त्र भी है : यीशु हमारा मार्ग है, लेकिन वह हर किसी का मार्ग नहीं है। फिर एक पंथ ऐसा भी कहता है कि ''यीशु जैसा समझा जाता है उससे थोड़ा भिन्न है।'' फिर, कुछ जीवन और संपत्ति और स्वर्ग और मृत्योपरांत जीवन पर अपने ही धर्मशास्त्र से लैस हैं। ये विचार उन सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों से आते हैं जिन्हें मसीही बाइबल की जगह पढ़ते हैं। यह बहुत खतरनाक चीज़ है। सचेत रहें।

ऐसा केवल दुनिया में नहीं होता। पौलुस कलीसिया के बारे में कह रहा है। कलीसिया में सचेत रहें। कुछ शिक्षक परमेश्वर के वचन से भटक जाएँगे। उनकी बातों से चौंके नहीं। भाइयों और बहनों, जब आप सुनें कि कलीसिया का कोई सदस्य, या कलीसिया का कोई अगुवा, यहाँ तक कि पास्टर, मसीह से भटक गया है, अपने विश्वास को खो चुका है, तो बाइबल कहती है कि ''अचम्भा न करो।'' ऐसा होगा ही। 1 यूहन्ना 2:19 में यूहन्ना कहता है, ऐसी भी होंगे जिन्हें हम मसीही समझते थे वे दिखाएंगे कि

वे मसीही नहीं थे। इसलिए, जब ऐसा हो, तो इसे अपने विश्वास की हानि न होने दें। शैतान कलीसिया में लोगों को सत्य से दूर करने के प्रयासों में लगा है, लोगों को झूठे शिक्षक बनने को प्रेरित करने के प्रयासों में लगा है। इसलिए, अचम्भा न करो।

इसी समय, हमें उनकी स्थिति पर दुख होना चाहिए, और बाकी लोगों को इसमें गिरने से बचाने के लिए लड़ना होगा। इसीलिए 1 तीमुथियुस में पौलुस कहता है, ''तू उन के अनुसार अच्छी लड़ाई को लड़ता रहे।'' कलीसिया में त्रुटियाँ खोजें। आप कहते हैं, ''अच्छा, आपको कैसे पता चलेगा कि क्या सत्य है और क्या झूठ?''

यह बात हमें उन शिक्षाओं की ओर ले जाती है जिसे इफिसुस के झूठे शिक्षक सिखा रहे थे। अब, यह स्पष्ट है कि पौलुस यहाँ पर किन्हीं विशिष्ट शिक्षाओं को संबोधित कर रहा है, लेकिन मुझे लगता है कि, 1 तीमुथियुस 4 में जो कुछ हो रहा है, हालांकि ठीक वैसी शिक्षाएँ आज के समय में नहीं हैं, तो भी उनकी जड़ें वही हैं। ज़रा इसके बारे में सोचें। पौलुस यहाँ पर दो बातों को संबोधित कर रहा है। वह उन शिक्षकों के बारे में कह रहा है जो परमेश्वर की भलाई को नकार रहे थे, और वे परमेश्वर के वचन को बिगाड़ रहे थे। अब, मैं चाहता हूँ कि आप मेरे साथ इन दोनों बातों को साथ में रख कर देखें और उन पर विचार करें।

चलिए एक दम पीछे उत्पत्ति 3 में लौटते हैं। जगत में पाप के प्रवेश से जुड़े उस अनुच्छेद का हम पहले ही अध्ययन कर चुके हैं। याद है जब सर्प ने हव्वा की परीक्षा ली थी, और परमेश्वर का नाम लेकर शैतान ने क्या किया था? उसने परमेश्वर का नाम लिया और जानबूझ कर परमेश्वर की सामर्थ्य, परमेश्वर की महानता पर ज़ोर दिया और परमेश्वर की भलाई और परमेश्वर के प्रेम को कम करके बताया। उसने पूरे समय बस यही आलाप लगाया कि परमेश्वर को उनके अच्छे–बुरे का पता नहीं था। परमेश्वर नहीं चाहता कि वह उन्हें सबसे बेहतर चीज़ें दें। परमेश्वर से अधिक तुम्हें पता है कि तुम्हारे लिए क्या अच्छा और क्या बुरा है, और परमेश्वर की भलाई से उसे जलन हो रही थी। इसके बाद, सर्प ने सबसे पहले क्या पूछा था? ''क्या सचमुच परमेश्वर ने ऐसा कहा था?'' वह प्रश्न, आज भी सक्रिय और जीवित है।

''क्या सचमुच परमेश्वर ने ऐसा कहा था? मेरा मतलब, निश्चय ही उसने ऐसा नहीं कहा था, या निश्चय ही उसने वैसा नहीं कहा था, या निश्चय ही उसका मतलब यह नहीं था, या निश्चय ही उसका मतलब वह नहीं था।'' हव्वा को वह प्रश्न सुनते ही शक हो जाना चाहिए था। उसे तो इसी बात से शक हो जाना चाहिए था कि एक सर्प उससे बातचीत कर रहा था, लेकिन इतना भी नहीं, तो उसे ''क्या

सचमुच परमेश्वर ने ऐसा कहा था'' को सुन कर तो शक होना ही चाहिए था। सर्प परमेश्वर के वचन को बिगाड़ रहा था। तो, यह था उत्पत्ति तीसरा अध्याय।

चलिए अब आप तेज़ी से 1 तीमुथियुस 4 में आ जाएँ, और आपको वही चीज़ दिखती है। वहाँ पर झूठे शिक्षक थे जो वे एक भले परमेश्वर से भली बातें अलग कर रहे थे जैसे कि विवाह, कुछ विशेष प्रकार के भोजन पर पाबंदी, और कह रहे थे कि हम वे सब नहीं कर सकते हैं। हम विवाह नहीं कर सकते। वे विवाह पर पाबंदी लगा रहे थे, और कुछ तरह के भोजन पर पाबंदी लगा रहे थे। वे परमेश्वर की भलाई को नकार रहे थे और परमेश्वर के वचन को बिगाड़ रहे थे, स्पष्ट ही, ऐसा कहते हुए कि परमेश्वर ने कहा था जबकि परमेश्वर ने वास्तव में ऐसा कुछ नहीं कहा था। इसलिए, ''सचेत रहो'', पौलुस कहता है। इसके बाद, सचेत रहो, जब लोग वचन में प्रकाशित परमेश्वर के मूल चरित्र को नकारने लगे, और लोग परमेश्वर के वचन में जमा–घटा करके उसे बिगाड़ने लगें।

हम कलीसिया में सत्य की घोषणा करते हैं.....

तो, हम कलीसिया में त्रुटियों का पता लगाते हैं, और वैसा करते हुए, हम पूरे हियाव के साथ धावा बोलते हुए कलीसिया में सत्य की घोषणा करते हैं। ''यदि तू भाइयों को इन बातों की सुधि दिलाता रहेगा,'' छठवाँ पद कहता है। पौलुस कहता है, ''यदि तू भाइयों को इन बातों की सुधि दिलाता रहेगा। कलीसिया को सत्य में व्याप्त और सिद्ध हो जाने दो।''

अब, हम जो देखते हैं वह यह है कि चौथे अध्याय के अंतिम भाग में, पौलुस, एक तरह से एक ही विचार को तीन अलग तरीकों से कहता है। वह कहता है, ''<u>अधिकार के साथ सत्य की शिक्षा दो।</u>'' ''पहली और प्रमुख बात'', पौलुस कहता है, ''इन बातों की आज्ञा दे; और सिखाता रह।'' छठवाँ पद कहता है, ''यदि तू भाइयों को इन बातों की सुधि दिलाता रहेगा, तो.....विश्वास और उस अच्छे उपदेश की बातों से..... तेरा पालन–पोषण होता रहेगा।'' आगे 13वें पद में यह कहता है, कि ''....पढ़ने और उपदेश और सिखाने में लौलीन रह।'' 15वाँ पद, ''अपनी और अपने उपदेश की चौकसी रख।'' यह बात 1 तीमुथियुस में हम पहले ही देख चुके हैं।

उसके ऐसा कहना कि '' कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए, पर .....में विश्वासियों के लिये आदर्श बन जा।'' किस बात में आदर्श बन जा? बोलते समय, कौन सी बात सबसे पहले आपके मुँह में आती है। ये वचन तेरे मुँह से सुनाई दें। परमेश्वर के वचन को बोल। बाइबल पढ़, बाइबल की व्याख्या कर, बाइबल से प्रोत्साहन दे, और बाइबल की बातें सिखा। इस प्रक्रिया के दौरान, तू वचन के अधिकार के प्रति अपनी अधीनता को दिखाएगा, और इस तरह, कलीसिया में अधिकार के साथ सत्य की घोषणा करने के द्वारा तू कलीसिया की अगुवाई करेगा। इसलिए पूरे अधिकार के साथ सिखा। तब, इसे अपने

जीवन में उतार। केवल सैद्धांतिक रुप में नहीं, बल्कि अपने जीवन में। ''अपनी....चौकसी कर,'' पौलुस कहता है। केवल अपनी कथनी से नहीं, बल्कि अपनी करनी में, अपने प्रेम में, अपने विश्वास में, और अपनी पवित्रता में भी।

इसलिए, रॉबर्ट मुरे मेकैन एक असाधारण पास्टर थे, जिन्हें सामर्थी परमेश्वर ने स्कॉटलैंड में1800 के आरंभ में बहुत प्रयोग किया था। 30 वर्ष की आयु में उनका स्वर्गवास हो गया था, और उनकी कब्र की शिला पर ये शब्द लिखे गए थेः

> 30 वर्ष की आयु में, अपनी सेवकाई के सातवें वर्ष में स्वर्गवास,
> परमेश्वर की निकटता में चलते हुए, वचन में, संवाद में, उदारता में, आत्मा में, विश्वास में, पवित्रता में विश्वासियों के लिए एक उदाहरण।
> परिश्रम करने और आत्माओं की चौकसी में दिन–रात अथक रुप से समर्पित।

एक पास्टर के रुप में एक बार उन्होंने कहा था, ''मेरे जीवन की व्यक्तिगत पवित्रता, मेरे लोगों की सबसे बड़ी ज़रुरत है।'' इसमें एक सच्चाई है और हमे वह तत्काल ही सुनने और लागू करनी चाहिए।

इसलिए, मैं सीक्रेट चर्च : फेमिली, मैरिज, सेक्स एंड द गॉस्पल का अध्ययन कर रहा हूँ, और इस दौरान, व्यभिचार के विचार ने मुझे घुटनों पर आने को विवश कर दिया, लेकिन न केवल संसार में फैले व्यभिचार का विचार, बल्कि कलीसिया में फैला व्यभिचार। मुझे कुछ विश्वसनीय शोध का पता चला। यह फोकस ऑन द फेमिली और कुछ अन्य शोध समूहो से था। तो, मैं इसे आपके साथ बाँटना चाहूँगाः लगभग 50 प्रतिशत पास्टरों की शादियों का अंत तलाक में होता है। लगभग 40 प्रतिशत पास्टर स्वीकारते हैं कि सेवकाई के आरंभ ही से उनके किसी गैर–महिला से विवाहोपरान्त संबंध थे। 50 प्रतिशत से अधिक पास्टर (इस तरह, अधिकांश पास्टर) कहते हैं कि पिछले साल वे अश्लील साहित्य की वेबसाईट पर गए थे। उनमें से लगभग एक तिहाई ने ऐसा पिछले महीने ही किया था।

इस बात ने मुझे घुटने टेकने को विवश कर दिया। मैंने अपनी पत्नी को यह बताया, और हम दोनो घुटनों पर आ कर इस बात के लिए प्रार्थना करने लगे। इन आँकड़ों को आपके साथ बाँटते हुए मैं काँप रहा हूँ। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि परमेश्वर के अनुग्रह से, मैं अश्लील साहित्य की वेबसाईटों पर नहीं जाता हूँ और एक पास्टर होने के नाते मैं कभी गया भी नहीं। परमेश्वर के अनुग्रह से, मैं अपनी पत्नी से बहुत प्रेम करता हूँ और उसके प्रति अपनी निष्ठा के अलावा कुछ भी, कुछ भी न तो सोंचता हूँ

और न ही सोंच सकता हूँ, लेकिन ये आँकड़ें मुझसे चीख–चीख कर कह रहे हैं, ''अपने जीवन की चौकसी रखो!'' इस कलीसिया का हर सदस्य, ''संभल जाए, नहीं तो मुँह के बल गिरोगे।''

अपने जीवन और अपने सिद्धांतों की चौकसी करो। पूरे अधिकार वचन को सिखाओ और इसे पूरी पवित्रता के साथ जीओ और अनन्तता के लिए प्रशिक्षण लो। इसी कारण, 7वाँ और 8वाँ पद, यहाँ के कुंजी पद हैं : '' पर अशुद्ध और बूढियों की सी कहानियों से अलग रह और भक्ति के लिये अपना साधन कर। क्योंकि देह की साधना से कम लाभ होता है, पर भक्ति सब बातों के लिये लाभदायक है, क्योंकि इस समय के और आने वाले जीवन की भी प्रतिज्ञा इसी के लिये है।'' इसलिए, अधिकांश लोगों का विश्वास है कि इफिसुस के लोग अपना अच्छा–खासा समय और धन विभिन्न उत्सवों के लिए खिलाड़ियों को प्रशिक्षित करने में लगाते थे। यह एक तरह का पागलपन था। पौलुस कहता है, ''उस तरह का प्रशिक्षण बुरा नहीं है, लेकिन यह सबसे श्रेष्ठ प्रशिक्षण भी नहीं है।'' तो, कुंजी यह है। ज़रा इसे सुनें : शारीरिक प्रशिक्षण मूल्यवान है। हम अपने शरीर की देखरेख करनी चाहिए। हम में से अधिकांश को, जिसमें मैं भी हूँ, इसे अधिक से अधिक और पहले से बेहतर रीति से करने की ज़रुरत है। हमारे शरीर पवित्र आत्मा के मंदिर हैं। हमें अच्छा भोजन करने की ज़रुरत है। हमें अच्छी तरह से कसरत करने की ज़रुरत है, लेकिन साथ ही, धार्मिकता के लिए जो प्रशिक्षण हम लेते हैं, यह उसके आगे फीका है।

इसलिए, प्रार्थना, और वचन, और आराधना और उपवास और सुसमाचार का प्रचार करने के प्रशिक्षण में हम अधिकाधिक समय और पहले से अधिक ऊर्जा और संसाधन लगाते हैं। उसके लिए अधिक प्रशिक्षण लो। आपका शरीर केवल कुछ ही सालों तक रहेगा। इस बात की कोई गारंटी नहीं कि सबसे स्वस्थ शरीर भी इस रात की सुबह तक बचेगा या नहीं, लेकिन धार्मिकता तो सदा के लिए बची रहेगी।

इसलिए, निवेश वहाँ करें। अपना समय, धन, ऊर्जा, और संसाधनों का वहाँ निवेश करें। धार्मिकता का प्रशिक्षण लें। पौलुस कहता है, ''उत्तरोत्तर और लगातार, अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ।'' यह एक प्रशिक्षण है। 15वें पद में वह कहता है, '' तेरी उन्नति..।'' 16वाँ पद कहता है, ''इन बातों पर स्थिर रह, ... तू अपने.... लिये भी उद्धार का कारण होगा,'' जिसका सीधा सा अर्थ है कि मसीह के स्वरुप में रुपांतरित होते हुए तुम्हारे उद्धार का कार्य पूरा होगा। ऐसा करते हुए, तू अपने उद्धार का कार्य करता रह, और स्थानीय लोगों तथा विश्व के दूसरों लोगों के उद्धार का कार्य करते जाओ। तो पौलुस कहता है कि तू ऐसा करेगा तो ''तू अपने, और अपने सुनने वालों के लिये भी उद्धार का कारण होगा।''

क्या कथन है! अब, स्पष्ट है, कि पौलुस ऐसा नहीं कह रहा है कि हम, स्वयं और अपने में लोगों का उद्धार करते हैं। निश्चय ही, पूरे नए नियम और पौलुस के लेखन से यह बात पूरी तरह साफ हो जाती

है कि उद्धार केवल मसीह देता है, लेकिन वह उन्हें उद्धार देता कैसे है? वह कलीसिया के, मसीहियों के, और कलीसिया के अगुवों के द्वारा लोगों को उद्धार देता है। इसलिए, मसीह के अनुयायी के रुप में, कलीसिया के अगुवों के रुप में, एक कलीसिया के रुप में जितने अधिक दुरुस्त होंगे, उतने ही हम सुसमाचार के प्रचार में प्रभावी होंगे। यही कारण है कि हम जो करते हैं वह हम क्यों करते हैं। क्यों हम सत्य की रक्षा करते हैं? कलीसिया में हम सत्य की रक्षा इसलिए करते हैं क्योंकि सत्य के द्वारा लोग बचाए जाते हैं। यदि हम इसे बिगाड़ दें, तो यह बचाएगा नहीं; यह हमे श्राप देगा।

कुछ सत्य को पकड़े रहते हैं और उसे कस कर जकड़ लेते हैं और किसी प्रकार का कोई समझौता नहीं करते, क्योंकि कलीसिया से सत्य सुनने पर लोगों का अनन्त जीवन दाव पर लगा है। पवित्रता के साथ जीवन जीएँ ताकि लोग हमारे भीतर उस भिन्नता को देख सकें जो मसीह हमारे मनों, और हमारे शरीरों, और हमारी बुद्धियों में लाता है। तो, वे देखते हैं कि आपमें जो मसीह है उसने सब कुछ बदल दिया है। इसलिए, हम संसार में सुसमाचार के प्रचार के लिए हम एक कलीसिया होने के नाते वह सब कुछ करते हैं जो हम करते आए हैं। हम इस पर लौटेंगे।

हमारे जीने का तरीका.....

हम एक दूसरे से एक परिवार के समान प्रेम रखते हैं।

तो, अंतिम भाग का अधिकांश खंड इस बात पर है कि हम कलीसिया में किस प्रकार जीवन जीते हैं। मैं इसे जल्दी से समाप्त करने का प्रयास करुँगा। हम एक दूसरे से एक परिवार के समान प्रेम रखते हैं। पाँचवें अध्याय की शुरुआती पंक्तियों में पौलुस तीमुथियुस को कहता है, '' किसी बूढ़े को न डांट, पर उसे पिता जान कर समझा दे, और जवानों को भाई जान कर, बूढ़ी स्त्रियों को माता जान कर। और जवान स्त्रियों को पूरी पवित्रता से बहिन जान कर, समझा दे।'' कितनी बढ़िया भाषा है! पौलुस कहता है, ''तीमुथियुस, जब तू कलीसिया में किसी बूढ़े आदमी या किसी बूढ़ी स्त्री से बातचीत करे, तो उस बूढ़े व्यक्ति को ऐसा सम्मान और स्नेह दे जैसा कि तू अपने माता–पिता को देता। जब तू किसी जवान भाई से बातचीत करे, तो उसका अपमान मत कर। जवानों से अपने छोटे भाई की तरह बातचीत कर, और जब तू किसी जवान स्त्री से बातचीत करे, तब इस रीति से पवित्रता के साथ बातचीत कर कि तेरी और उसकी, दोनो की पवित्रता पर आँच न आए।'' यह बहुत अच्छी सलाह है। पारीवारिक जीवन के लिए ये अच्छे आदेश हैं, और हम है भी एक परिवार। इसीलिए तो हम कलीसिया के अपने परिवार को विश्वास का परिवार कहते हैं। हम एक दूसरे से एक परिवार की तरह जुड़े हैं।

यह एक अद्‌भुत सच्चाई है, इस जगह में भी, एक दूसरे को ऐसे देखना। हम बस एक दूसरे की बगल की कुर्सियों में बैठे लोग नहीं हैं। हम भाई और बहन और आत्मिक माता–पिता हैं। एक कलीसिया के

रुप में हम जो हैं, उसके आश्चर्य को कम करके आँकने की परीक्षा का विरोध करें। एक कलीसिया से दूसरी कलीसिया जानेवाले लोग इस सच्चाई के महत्व को सस्ता बना देते हैं। हम दुनिया को क्या बता रहे हैं? दूसरे परिवार में चले जाओ। आप उस परिवार से ऊब गए, या आपको यहाँ लोग दूसरों से अधिक महत्व नहीं देते, जो कि आपको पसन्द नहीं है, तो चलो दूसरे परिवार में चले जाते हैं।'' हम दुनिया को क्या दिखा रहे हैं?

हमें उन लोगों की चिंता है जिनका कोई परिवार नहीं है।

एक दूसरे के प्रति हमें परिवार जैसा प्रेम दिखाने की ज़रुरत है क्योंकि हम एक परिवार हैं, और हमे उन लोगों की चिंता है जिनका कोई परिवार नहीं है। यही कारण है कि तीसरे पद में, पौलुस विधवाओं के बारे में कहना शुरु करता है। यह उन पदों में से एक है जिस पर मैं पहुँचना चाह रहा था, और वास्तव में, इन सर्दियों की शरुआत में 1 तीमुथियुस का साथ में अध्ययन करने की इच्छा के कारणों में से एक कारण यह पद था। तो यही बात : विश्वास के एक परिवार के नाते, हम अपने बीच में, शहर में, और संसार में मौजूद अनाथों की देखरेख पर केंद्रित रहे हैं। परमेश्वर के अनुग्रह से, इस देह में बच्चों को गोद लेने की प्रवृत्ति है और संसार भर के बच्चे यहाँ पर हैं। हमारे पूरे देश में गोद लिए बच्चे हैं जिनकी हमारे अच्छे लालन–पालन के कारण बहुत अच्छी देखरेख हो रही है। यह जिस रीति से शहर भर में बढ़ रहा है उस पर हम बाद में बातचीत करेंगे। तो, मैं उन सब बातों के लिए परमेश्वर की स्तुति करता हूँ, और ऐसा करने के लिए हमें आदेश भी दिया गया है।

लेकिन साथ ही, हमें विधवाओं की चिंता करने और विधवाओं की देखभाल करने का आदेश भी मिला है। तो याकूब 1:27, याकूब का अध्ययन करते समय, जिस पद ने अनाथों की और भी गहरी देखरेख के लिए इस कलीसिया को और आगे बढ़ाया था, कहता है ''हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है, कि अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उन की सुधि लें.....।'' मुझे यह पता है, और यह बात हमेशा मेरे दिमाग भी रहती है, ''ठीक है, हम अनाथों की देखरेख तो करते हैं, लेकिन हम विधवाओं के साथ क्या कर रहे हैं?'' वास्तविकता यह है, कि हम कुछ न कुछ कर रहे हैं। कुछ बातें संबंधित और संघटित रुप से की जा रही हैं। इस कलीसिया के कुछ सदस्यों द्वारा कुछेक सेवकाइयाँ भी चलाई जा रही हैं, विशेष रुप से, विधवाओं की देखरेख का काम बहुत ही सराहनीय है, लेकिन साथ ही, एक कलीसिया के रुप में हमने खुद से यह प्रश्न नहीं कहा कि ''हम संकल्पूर्वक से कैसे इस देह में विधवाओं की सही रीति से देखरेख और देखभाल सुनिश्चित कर पाएंगे? क्योंकि परमेश्वर, हाँ, सचमुच, वह अनाथों का पिता है, लेकिन साथ ही, वह विधवाओं का रक्षक भी है। वह कहता है, ''*उन विधवाओं का जो सचमुच विधवा हैं आदर कर।*'' जब वह ''आदर'' शब्द का प्रयोग करता है, तब उसका अर्थ केवल सम्मान देने से नहीं होता है। यह शब्द देखभाल करना और सहारा देने के लिए प्रयुक्त हुआ है।

इसलिए, मैं चाहता हूँ, कि हम इस बात पर विचार करें कि जिन पदों को हमने अभी पढ़ा है उसके हमारे लिए क्या मायने हैं। यह केवल बस इतना भर नहीं है कि ''ठीक है, यह बस हमारे बीच की विधवाओं के बारे में है।'' यह विधवाओं के प्रति विधवाओं के रवैये के बारे में है, यह हम सबके बारे में है।

ये पद कई स्तरों में चुनौती भरे हैं, क्योकि एक स्तर में, यह विधवाओं के लिए बहुत भावनात्मक है, और मैं इसमें अपनी पत्नियों को खो चुके पतियों को शामिल करना चाहूँगा। निश्चय ही, यह पद्यांश उन विधवाओं के विषय में है जिनके पास कमाई का कोई साधन नही है, लेकिन मैं जानता हूँ कि हमारी इस कलीसिया में भी बहुत से भाई–बहन हैं जो अपने जीवन–साथी को खोने के दुख से गुज़रे हैं। हालाकि ये पद विधवाओं का ध्यान रखने के बारे में हैं, क्योंकि इन पदों का अंत इसी बात पर होता है, मैं जानता हूँ कि इस कलीसिया में ऐसी अनमोल बहने हैं जो अपने पति को खोने के दुख से गुज़री है, और मैं उस दुख की कल्पना तक नहीं कर सकता हूँ। आप में से कुछ कम उम्र हैं और कुछ बुजुर्ग। मैं आपके साथ रोया हूँ; मैं आपके लिए रोया हूँ; मैने आपके पतियों के अंतिम संस्कार के समय उपदेश दिया है, और मैं जानता हूँ कि यह आपके लिए कितना दुखमय है। इसलिए, यहाँ पर एक चुनौती है।

फिर, ठीक इसी समय, पास्टर होने के नाते, मेरा मन ऐसी बात की ओर जाता है जो कि शायद 1 तीमुथियुस के समय इतना हावी नहीं था जितना कि आज हमारे समय में। हमारी कलीसिया में युवतियाँ और बुज़र्ग महिलाएँ हैं जिनके पतियों का देहान्त हो चुका है, और फिर ऐसी महिलाएँ भी हैं जिनके पतियों ने उन्हें छोड़ दिया है और उन्हें तलाक दे दिया है, और अब वे अपना जीवन बिना अपने पति के, बिना अपने पति के सहारे के जी रही हैं। इस तरह, देखा जाए तो वे एक तरह से विधवाओं का सा जीवन ही जी रही हैं। इसलिए, पौलुस केवल विधवाओं की ही बात नहीं कर रहा है। यह बहुत ही गहरे भाव हैं।

पहली सदी की इफिसुस की कलीसिया और 21वीं सदी की हमारी कलीसिया के बीच कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण अन्तर हैं। उदाहरण के लिए, कि आज हमारे पास विकलांगता बीमा, जीवन बीमा, 401के योजना, सहायता प्राप्त जीवन केंद्र, नर्सिंग होम्स उपलब्ध हैं जो कि बुजुर्गों, विशेषकर, विधवाओं के लिए बनाए गए हैं। निश्चय ही, ये सभी बातें बहुत अच्छी हैं। लेकिन फिर, यदि हम सावधान न रहे तो हम कलीसिया में अपनी विधवाओं की देखरेख का सारा भार इन संस्थानों पर डाल कर अपनी ज़िम्मेदारी से हाथ धोने का प्रयास कर सकते हैं। इसलिए, यह ज़रुरी है कि हम सेचता रहें।

तब, जब हम इन पदों पर आते हैं, तो पौलुस यहाँ कुछ विशिष्ट परिस्थितियों के बारे में कह रहा है। जैसा कि, 2 तीमुथियुस 3 और 1 तीमुथियुस 2 से हम जानते हैं, कि वहाँ पर कुछ महिलाएँ थीं,

विशेषकर जवान महिलाएँ, जो झूठी शिक्षाओं को फैलाने में मदद कर रही थीं, और गपशप करने में व्यवस्त रहती थीं। इसलिए, पौलुस यहाँ पर कुछ विशेष बातों के विषय में कह रहा है जो उनके लिए इतनी मार्मिक नहीं थी जितनी की आज इस कलीसिया के लिए हैं। इसलिए, कहने कर अर्थ यह है, इन सब चुनौतियों के साथ, मैं करना यह चाहता हूँ कि मैं बस इन पदों को, बिल्कुल सरल तरीके से, सीधा–सीधा पढ़ना चाहता हूँ। पौलुस क्या कह रहा है? बाइबल यहाँ पर क्या कह रही है? फिर, मैं चाहता हूँ कि हम तब इस बात पर विचार करें कि हमारे लिए इन सबके क्या मायने हैं।

तो, पौलुस यहाँ पर क्या कह रहा है? पहली बात, बाइबल हमें सिखाती है कि असहाय विधवाओं की सहायता करने के द्वारा हमें उनका आदर कर। तीसरे पद में पौलुस कहता है, कि *''उन विधवाओं का जो सचमुच विधवा हैं आदर करे।''* इन पदों को पढ़ते ही, हमें इस बात का अहसास होता है कि यहाँ पर सभी विधवाओं की बात नहीं हो रही है। वहाँ ऐसी महिलाएँ थी जो सचमुच की विधवा थीं और ऐसी भी थी जो सचमुच की विधवा नहीं थीं। यहाँ पर अन्तर इस बात का नहीं है कि पति की मृत्यु हुई थी या नहीं। यहाँ पर अन्तर परिवार का है। चौथे पद में वह कहता है, *'' और यदि किसी विधवा के लड़के बाले या नाती पोते हों, तो वे पहिले अपने ही घराने के साथ भक्ति का बर्ताव करना, और अपने माता–पिता आदि को उन का हक देना सीखें, क्योंकि यह परमेश्वर को भाता है। जो सचमुच विधवा है, और उसका कोई नहीं..... ।''* तो, पौलुस यहाँ इस पर उनकी बात कर रहा है जो : सचमुच की विधवा है, और जिसका कोई परिवार नहीं है। तो इस तरह, पहली विशेषता है कि उनका कोई सगा–संबंधी नहीं होना चाहिए।

यदि किसी विधवा के सगे–संबंधी हैं, तो उन लोगों को चाहिए कि वे अपने माता–पिता या दादा–दादी/नाना–नानी की देखभाल करें। प्राथमिक ज़िम्मेदारी विधवा के बच्चों और बच्चों के बच्चों की होती है। तो जिन किसी के भी बुज़ुर्ग माता–पिता हैं, बाइबल उन्हें यह साफ–साफ आदेश देती है कि : अपने माता–पिता और दादा–दादी/नाना–नानी की देखभाल करें। यह बाइबल का आदेश है। चौथा पद कहता है कि यह परमेश्वर को भाता है। यह आपके विश्वास का प्रदर्शन करता है।

आठवाँ पद कहता है, *''पर यदि कोई अपनों की और निज करके अपने घराने की चिन्ता न करे, तो वह विश्वास से मुकर गया है, और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है।''* अपने बुज़ुर्ग माता–पिता की देखरेख न करना आपमें और आपके द्वारा मसीह के प्रेम का बुनियादी प्रदर्शन है। ऐसा न करना अपने विश्वास को नकारना है। बाइबल यहाँ कह रही है, कि अपने परिवार की देखरेख न करना किसी भी मसीह के लिए असंभव बात है। यदि आप अपने परिवार की भी देखरेख नहीं कर रहे हैं, तो निश्चय ही यह प्रश्न उठता है कि आपके भीतर मसीह है भी या नहीं। यह आपके विश्वास को दिखाता है, और यह कलीसिया को चिंतामुक्त करता है।

यही कुंजी है। जब बात विधवाओं की हो तो कलीसिया की भूमिका दूसरे नम्बर पर आती है। पहली भूमिका परिवार की होती है। इस मामले में जहाँ तक संभव हो परिवार की भूमिका प्राथमिक होती है। इसलिए, कलीसिया से विधवाओं को सहायता तभी दी जानी चाहिए, पौलुस कहता है, कि जब उनका कोई सगा–संबंधी न हो।

दूसरी बात, वे परमेश्वर पर आश्रित हों। *''.....वह परमेश्वर पर आशा रखती है,.....'* पाँचवाँ पद। वे प्रार्थना के प्रति समर्मित हों। तो, वह आगे कहता है कि *'' वह परमेश्वर पर आशा रखती है, और रात दिन बिनती और प्रार्थना में लौलीन रहती है।* '' यहाँ पर बहुत ही सुंदर चित्रण है। यहाँ एक ऐसी मसीही विधवा का चित्रण है जो प्रार्थना में समर्पित और प्रार्थना की अनोखी सेवकाई में लगी है। ऐसे में आपको लूका 2:36–37 के हन्नाह की याद आ ही जाती है जो ''.....चौरासी वर्ष से विधवा थी, और मन्दिर को नहीं छोड़ती थी पर उपवास और प्रार्थना करके रात–दिन उपासना किया करती थी।''

मैंने सूज़ हंट का एक कथन पढ़ा था। वह इस संदर्भ में सही ठहरता है। उन्होने कहा था,
''मुझे ऐसा लगता है कि विधवाएँ उस आयाम में पहुँच चुकी हैं जहाँ वे परमेश्वर पर आश्रित होती हैं और स्वयं को बिचवई की प्रार्थना की सेवकाई के लिए तैयार करती हैं। यीशु ने विधवा की दमड़ी की सराहना और पुष्टि की थी, क्योंकि उसने अपनी गरीबी से, अपने सर्वस्व से दान दिया था (लूका 12:44)। शायद विधवाओं की यह दमड़ी तब और भी अधिक सामर्थी होगी जब वे सहायक/संरक्षक और बिचवई की प्रार्थना के लिए एक साथ आएंगी। बुजुर्ग महिलाएँ, जिन पद दैनिक कार्यों का भार नहीं होता है, वे बिचवई की प्रार्थना का शक्तिशाली स्रोत होती हैं।''

यहाँ पर इसी का चित्रण है। प्राथमिक रुप से यहाँ पर उन वृद्ध विधवाओं का संदर्भ है जिन पर अब बच्चों के लालन–पालन का दायित्व नहीं है, या जवान महिलाओं के पर जो भी दायित्व होता है, उससे वे मुक्त होती हैं। उनके पास प्रार्थना में बिताने के लिए बहुत सा समय होता है।

इसलिए, इस बिंदु पर, मैं रुकना चाहता हूँ और एक पास्टर होने के नाते विशेषकर वृद्ध विधवाओं, या कि उन विधवाओं को बुलाना चाहता हूँ जिन पर इस समय बच्चों के लालन–पालन या काम पर जाने का दायित्व नहीं है। मैं कलीसिया को विधवाओं की देखरेख करने को बुलाना चाहता हूँ, और इसके बाद मैं इन धर्मी महिलाओं को प्रार्थना की अनोखी सेवकाई के लिए स्वयं को समर्पित करने को बुलाना चाहता हूँ, जिन्हें परमेश्वर ने ऐसी परिस्थिति में आपको दिया है जो अवश्य ही आप स्वयं पर नहीं डालना चाहेंगीं, लेकिन परमेश्वर ने उस परिस्थिति में आपको रखा है कि उसकी महिमा के लिए आप अधिकाधिक काम में आ सकें। इसलिए, इस रीति से वृद्ध विधवाओं को सहारा दें।

इसके बाद, सेवा के लिए वृद्ध विधवाओं को सूची में रखना। आप नौवें पद में हैं, और पौलुस उन विधवाओं के नाम लिखे जाने की बात कहता है। इस बात को लेकर मतभेद है कि पौलुस यहाँ किस चीज़ के लिए उनके नाम लिखे जाने की बात कहता है। कुछ लोगों का विचार है कि शायद यह उस सहायता के संदर्भ में है जिसकी बात पौलुस अध्याय के पहले हिस्से में कहता है, लेकिन फिर आप में से अधिकांश, जहाँ पर कि मैं भी आऊँगा, यह सोचते हैं कि पौलुस शायद कलीसिया में सेवा कर रही विधवाओं के किसी विशेष समूह में नाम लिखवाने की बात कह रहा है। बुनियादी तौर पर वह उस तरह की भाषा का प्रयोग करता है जिसका प्रयोग उसने 1 तीमुथियुस 3 में किया था, और एक तरह से, वृद्ध विधवाओं के विशेष समूह की योग्यताओं के बारे में कह रहा है जिनके भीतर कलीसिया में अनोखी रीति से सेवा प्रदान करने की क्षमता है। लेकिन केवल प्रार्थना के द्वारा ही नहीं, वरन् कलीसिया में सेवकाई करने के द्वारा।

वह कहता है, वे परिपक्व महिलाएँ हों। वह यहाँ पर वृद्ध महिलाओं के बारे में कह रहा है। वह कहता है, *''जो साठ वर्ष से कम की न हो।''* यहाँ पर शायद उम्र को लेकर कोई कड़े नियम नहीं हैं, लेकिन शायद खुद कामकाज के द्वारा अपना गुज़ारा कर पाने की क्षमता के न होने की बात का संदर्भ है; वे स्त्रियाँ जिनके दोबारा विवाह करने की आशंका कम है; इन बातों पर हम अभी थोड़ी ही देर में बातचीत करनेवाले हैं। इसलिए, बाइबल कहती है कि वे परिपक्व महिलाएँ होनी चाहिए; जो विश्वासयोग्य पत्नी रही थीं; अक्षरशः, एक पति की पत्नी, और पति को समर्पित रही हो। *''जिस ने बच्चों का पालन–पोषण किया हो'',* निश्चय ही यहाँ पर निःसंतान महिलाओं की योग्यता को खारिज नहीं किया गया है, वरन् कि जिन महिलाओं को परमेश्वर ने लालन–पोषण का विशेष वरदान दिया है, उसको बढ़ाने की बात हो रही है, *''पाहुनों की सेवा की हो,''.....पाहुनाई दिखाई हो। वे दीन सेविका हों, ...''पवित्र लोगों के पांव धोए हो, दुखियों की सहायता की हो,''* वे निःस्वार्थ हों। *''.....और हर एक भले काम में मन लगाया हो।''* वे दयालु हों, और भले कामों के लिए समर्पित हों।

इस तरह, पौलुस कह रहा है कि ऐसी विधवाओं के लिए कलीसिया में सेवकाई करने के अनोखे अवसर उपलब्ध हैं। तो, वह उन्हें बुला रहा है कि वे कलीसिया की सेवा के द्वारा धरती पर अपने समय को उपयोगी बनाएँ और जब वे ऐसा करें तो कलीसिया उन्हें सहारा दे।

अब, ग्यारहवें पद में पौलुस जवान विधवाओं के बारे में कहना शुरु करता है। यह उसकी कही तीसरी बात है। वह कहता है, ''....कि जवान विधवाएं ब्याह करें....।'' अब, हमें यह बात याद रखनी चाहिए कि पौलुस यहाँ पर कुछ विशिष्ट परिस्थितियों के विषय में कह रहा है। हम यह बात जानते हैं, क्योंकि आप 1 कुरिन्थियों 7 में जाते हैं, और वह अकेली महिलाओं, पुरुषों और विधवाओं से कह रहा है, ''विवाह मत

करो।'' इसलिए, आपको याद होगा कि यहाँ इफिसुस में झूठी शिक्षाओं का प्रचार हो रहा था जो कहती थीं कि ''विवाह करना बुरा है। परमेश्वर ने विवाह को निषिद्ध ठहराया है।'' ऐसी शिक्षाओं के चलते जवान विधवाएँ विवाह नहीं कर रही थीं, जिसके कारण, वे अपने विश्वास और सत्य से भटक रही थीं। इसलिए, पौलुस कहता है, ''यह उनके लिए अच्छा है, और मैं चाहता हूँ कि हर जवान विधवा विवाह करे।'' लेकिन यह बात किसी आदेश की तरह नहीं कही गई है कि हर जवान विधवा को विवाह करना ही है। बल्कि, इसमें दो बातों का स्पष्ट आदेश है : पहली बात, वे आलस को त्यागें, और वे बकबक करने से दूर रहें। पौलुस यहाँ पर इफिसुस की कलीसिया में आलस, बकबक, और दूसरों के कामों में अडंगा डालने जैसी समस्या के बारे में कह रहा है। वह कहता है, ''तुम्हें इन सबसे दूर रहना है।''

तो भी, इसके बाद, आप सोचने लगते हैं, ''ठीक है, इसका क्या अर्थ है? हमारे लिए इसके क्या मायने हैं? विश्वास के इस परिवार की जवान विधवाओं के लिए इसके क्या मायने हैं?'' मेरे विचार से जो बात हम 1 तीमुथियुस 5 में देख रहे हैं, वह है जवान विधवाओं और वृद्ध विधवाओं के बीच का अन्तर। जवान विधवाएँ, विशेषकर, जिन पर बच्चों को पालने–पोसने का दायित्व अब भी है, या कि शायद, जो घर चलाने के लिए अब भी कामकाज में जुटी हैं जो कि हो सकता है वृद्ध विधवाएँ न करती हों। वृद्ध विधवाओं की तुलना में जवान विधवाओं के विवाह करने के अधिक आसार थे, और पौलुस कहता है, ''जवान विधवाओं का नाम न लिखना, क्योंकि सच्चाई यह है, संभावना यह है, कि शायद वे दोबारा विवाह कर लें।'' यह अच्छी बात है।

मैं जानता हूँ कि कुछ जवान विधवाएँ सोचती होंगी, ''क्या मेरा दोबारा विवाह करना सही होगा?'' मैं चाहता हूँ कि आप यह बात सुनें कि बाइबल ऐसा नहीं कहती कि ''अच्छा, तुम्हारा दोबारा विवाह न करना पाप है।'' लेकिन बाइबल कह रही है कि ''ठीक है।'' बाइबल कह रही है कि दोबारा विवाह करना अच्छा है। दोबारा विवाह करके अपने पति के प्रति समर्पित होना अच्छी बात है। दूसरा विवाह करके अपने बच्चे पालना अच्छी बात है, यदि प्रभु आपकी अगुवाई करे तो, यह पूरी तरह से अच्छी बात है, लेकिन पूरी तस्वीर साफ है। विधवा चाहे जवान हों या वृद्धा, यदि उसे सहारा देनेवाला कोई सगा–संबंधी न हो, जो अपने आश्रय के लिए परमेश्वर पर भरोसा और विश्वास करती हो, तो कलीसिया में उनको सहारा और देखरेख दायित्व हम सभी पर है। साथ ही, जवान व वृद्ध महिलाओं को पौलुस कलीसिया में अपनी प्रार्थना व सेवा के द्वारा संसार में सुसमाचार के प्रचार के अवसर का लाभ उठाने को बुला रहा है।

तो, यह रही मुद्दे की बात। एक कलीसिया के रुप में, हम पर यह दिखाने का दायित्व है कि परमेश्वर विधवाओं का रक्षक है, और हम साफ तौर पर उसके चरित्र को दिखाना चाहते हैं। यही हमारे जीने का

तरीका है। हाँ, अनाथों का पिता और विधवाओं का रक्षक। हम चाहते हैं, इस देह में, जवान और वृद्ध, एक ही रीति से परमेश्वर की देखरेख और प्रेम और उसकी दया को जानें।

हम क्यों आस्तित्व में हैं.....

अंत में, चलिए देखें कि हम क्यों आस्तित्व में हैं। मेरे साथ 1 तीमुथियुस 4:10 में वापिस लौटें, और यहाँ हम समाप्त करेंगे। हमने इस पद पर ध्यान नहीं दिया था। हमे इसे गहराई से नहीं देखा था, और मेरे विचार से यह पूरी पुस्तक के प्रमुख पदों में से एक है। इसलिए, मैं चाहता हूँ कि हम दोबारा से उस पर जाएँ। 1 तीमुथियुस 4:10 कहता है, '' क्योंकि हम परिश्रम और यत्न इसी लिये करते हैं, कि हमारी आशा उस जीवते परमेश्वर पर है, जो सब मनुष्यों का, और निज करके विश्वासियों का उद्धारकर्ता है।'' अब, जब यह पद कहता है कि ''..जो....विश्वासियों का,'' तब पौलुस यहाँ पर कह रहा है कि ''वे जो विश्वास करते हैं।'' हम अगले सप्ताह इसे देखेंगे क्योंकि इसकी भाषा 1 तीमुथियुस 5:17 के समान ही है। इसलिए, '' जो सब मनुष्यों का, और निज करके विश्वासियों का उद्धारकर्ता है।'' वह संसार में हर विश्वास करनेवाले का उद्धारकर्ता है।

यह दिखाना कि परमेश्वर का पिता होना क्या मायने रखता है।

तो, यह रहा हमारे आस्तित्व में होने का कारण। इसलिए, जो कुछ भी हमने सीखा है उसे एक साथ रख कर देखो। विश्वास का परिवार, यही है हमारे आस्तित्व में होने का कारण। हम यह दिखाने के लिए आस्तित्व में हैं कि हम दिखा सकें कि परमेश्वर का पिता होना क्या मायने रखता है। एक कलीसिया के रुप में, हम एक परिवार हैं। हम परमेश्वर के घराने हैं, और यह बात हमारी अगुवाई को प्रभावित करता है; यह हमारे कामकाज के तरीकों को प्रभावित करता है; यह हमारी जीवन–शैली को प्रभावित करता है। यह इतना अधिक महत्वपूर्ण है, कि एक कलीसिया के रुप में हमारे एकजुट होते समय यह बात वह हमारे मन और दिमाग में गहराई से उतारेगा। यह कोई सांस्कृतिक दस्तूर या नीरस धर्म नहीं है; यह एक अलौकिक सच्चाई है। इफिसियों 3:10 कहता है, '' ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर, जो स्वर्गीय स्थानों में हैं प्रगट किया जाए।'' वह स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं से एक साथ कह रहा है, कि ''मेरी कलीसिया में मेरे चरित्र और ज्ञान को प्रदर्शित होते देखो।'' हम परमेश्वर की उपस्थिति में रहनेवाले, परमेश्वर के घराने की अभिव्यक्ति, उसके वचन के संरक्षक हैं। हम जिस बात का हिस्सा हैं वह बहुत ही महत्वपूर्ण है, और हम यह दर्शाते हैं कि परमेश्वर का पिता होना क्या मायने रखता है। कलीसिया को देखें, और आपको वे लोग दिखाई देंगे जिनका पिता स्वयं परमेश्वर है। वे किस प्रकार एक दूसरे से जुड़े हैं। वे कैसे एक दूसरे से प्रेम करते हैं। वे कैसे एक दूसरे के साथ रहते हैं। वे कैसे एक दूसरे की अगुवाई करते हैं।

संसार को यह बताने के लिए कि परमेश्वर की उद्धारकर्ता है।

साथ ही, हम आस्तित्व में हैं, और ऐसा करते हुए, संसार को यह बताने के लिए परमेश्वर ही उद्धारकर्ता है। हम परिश्रम और यत्न इसी लिये करते हैं। हम कलीसिया में कार्य करते हैं। हम परमेश्वर के घराने सा बर्ताव करते हैं, क्योंकि हम चाहते हैं कि पूरा संसार यह जान ले कि परमेश्वर सभी लोगों का उद्धारकर्ता है। इसलिए, इसका अर्थ यह हुआ, कि हम सब एक परिवार की तरह हर राष्ट्र के मिशन पर हैं। यही तो है कलीसिया : मिशन में रत एक परिवार, 1 तीमुथियुस 4:10 । आप इसे 1 तीमुथियुस 2:4 के साथ रख कर देखो। ये नए नियम में पौलुस के सभी लेखनों में मिशन पर सबसे उत्कृष्ट दो पद, क्योंकि उन दो पदों में, हमें पता चलता है कि परमेश्वर की इच्छा है कि सब प्रकार के मनुष्य उसके परिवार, उसके घराने में शामिल हों। हर राष्ट्र, जाति, भाषा और लोग। तो संसार में 11,000 से अधिक जनसमूह हैं। परमेश्वर उन सभी को अपने परिवार में लाना चाहता है। वह उन सभी को चाहता है।

उन तरह के लोगों के कई हज़ारों समूह हैं, ऐसे लोगों के समूह पूरे संसार भर में हैं, जिन्होंने आज तक कलीसिया से सुसमाचार नहीं सुना है, और उन्होंने अभी तक कलीसिया में सुसमाचार नहीं देखा है। हज़ारों ऐसे जनसमूह हैं, एक अरब से अधिक लोग, जिन्हें नहीं पता कि कलीसिया में परमेश्वर का परिवार कैसा दिखाई देता है, और यह ज़रुरी है कि वे देखें। हम चाहते हैं कि वे देखें। पुरनिये, सेवक, भाई, बहन, जवान विधवाएँ और वृद्ध विधवाएँ, हम सभी इसलिए आस्तित्व में हैं क्योंकि हम चाहते हैं कि वे भक्ति के भेद को देखें। परमेश्वर की भव्यता, मसीह, और कलीसिया में मसीह की महिमा। हम यही बात उन्हें दिखाना चाहते हैं। हम इसी कारण जीते हैं। हम इसीलिए मरते हैं। हमारे जीवनों से अधिक हम चाहते हैं कि वे उसकी महिमा को देखें। हम मिशन पर लगा एक परिवार हैं। हम विश्वासपात्र हैं। हम इस बात की आशा करते हैं कि एक दिन हम एक ऐसा परिवार होंगे जिसमें हर राष्ट्र के सदस्य होंगे। एक दिन, सभी 11000 जनसमूहों, बलोखे और वे और आरुंदो और दूसरे हज़ारों, हज़ार लोगों के साथ, हम सभी परमेश्वर पिता और हमारे राजा मसीह के सिंहासन के इर्दगिर्द खड़े होंगे, और एक परिवार की तरह उसकी महिमा की उद्घोषणा करेंगे।